किलोल

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

वर्ष 5 अंक 05, मई 2021

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य 80/-

अनुक्रमाणिका

ये नभ के हैं न्यारे तारे 6

गर्मी आई 7

वो बचपन का जमाना था 8

पंचतंत्र की कथाएँ-संगठन की ताकत 9

धरोहर अपनी कहानी लिए 11

खिलौने 12

अमराई 13

हमारे पौराणिक पात्र- माता शबरी 14

गर्मी आई 16

प्रिंट रिच गांव, प्रिंट रिच वॉर्ड 18

मेरी धरती चमत्कारी 20

महतारी पूछय सवाल 22

चूहा-चुहिया 23

बिल्ली और पिल्ली 25

नारी शक्ति 26

चीकू ने जब मिर्ची खाई 27

बिल्ली रानी 29

बेटी 31

ये गर्मी के मीठे फल 33

मेहनत का फल 35

पापा की गुड़िया 37

माँ 39

माताओं के साथ एक कदम 41

जीव हरिया जाही 43

शहादत को सलाम 45

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ 48

लालच का फल 49

मैं हूँ पानी 51
हमारे प्रेरणास्रोत-रासबिहारी बोस 53
रंग बदलते रिश्ते 56
बाबा भीमराव अम्बेडकर 59
गर्मी के दिन आगे 61
सच्ची श्रद्धांजलि 63
रानीकीड़ा 65
वक़्त है साहब, गुजर जाएगा 66
नानपन के मोर गॉव 68
मेरा सपना 70
चार पहरेदार 72
अखबार के पन्नों से 73
रक्षा करो माँ 75
अधूरी कहानी पूरी करो 76
आकाश और क्रिकेट 76
कन्याकुमारी पटेल द्वारा पूरी की गई कहानी 77
सुधारानी शर्मा द्वारा पूरी की गई कहानी 78
संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी 79
टेकराम ध्रुव 'दिनेश 'द्वारा पूरी की गई कहानी 80
शालिनीपंकज दुबे द्वारा पूरी की गई कहानी 81
यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गई कहानी 82
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 83
पिकनिक 83
राख सी हस्ती 84
आधुनिक काल 86
माँ कुछ चमत्कार करो 87
कुछ खाने को मिल जाये 89
जवारा विसर्जन 91

नटखट नन्ही 93
कन्या भोज 95
अइसे जीनगी ल पहाना हे 96
बुजुर्ग बरगद की तरह होते हैं 98
बेटे की मुस्कान 100
अना 102
अमर बलिदान 105
लहुटत हे कोरोना 107
भलाई 108
फोटु खिंचईया के गोठ 109
भाई बहन 111
कोरोना और बचाव 113
छत्तीसगढ़ी वर्ण 115
भाग्य 117
होली में गोली 118
पहेलियाँ 120
महतारी के अछरा 123
मजदूर और मेहनत 124
कहती कोयल 126
खेल खेल में 128
मास्क वाली होली 131
आग के गोले 132
अवसर 134
वीर जवान 135
माँ 136
शक्ति स्वरूपा देवी महिमा 138
मोर छत्तीसगढ़ के गाँव 140
शिक्षा का मूल्य 141

कैलाश में होली 142
कोरोना नारे..... 143
चित्र देख कर कहानी लिखो 144
वाणी मसीह द्वारा भेजी गई कहानी 145
चिंटू की पहली रेलयात्रा 145
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी 146
भ्रमण..... 146
यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी..... 147
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र..... 148
ब्रज की होली 149
चंदा मामा..... 150
सफलता की कहानी-सकारात्मक परिवर्तन 152
गुड़िया लाही..... 154
भाखा जनऊला 155

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, शशि शर्मा, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका एवं आवरण पृष्ठ

पुनीत मंगल

प्यारे बच्चो एवं शिक्षक साथियो,

प्रति वर्ष एक मई को हम श्रमिक दिवस मनाते हैं.सारी दुनिया के औद्योगिक विकास में श्रमिक वर्ग की कड़ी मेहनत के योगदान को सम्मान देने के लिए श्रमिक दिवस मनाया जाता है. सभी को जीवन में सफलता पाने के लिए श्रम करना आवश्यक है. हमें किसी न किसी कौशल को सीखने का प्रयास करना चाहिए.

नई शिक्षा नीति में भी प्रत्येक विद्यार्थी को किसी न किसी व्यवसाय का ज्ञान होना आवश्यक है. कोई भी काम चाहे वह नल, बिजली, कुम्हार, बढ़ाई, लोहार, मैकेनिक, हलवाई, सफाई से संबंधित काम हो, सभी का समान रूप से सम्मान करना चाहिए. इन सभी क्षेत्रों में काम करने वाले श्रमिक हमारे जीवन को आसान बनाते हैं. जिस देश में श्रम का सम्मान होता है वह बहुत तरक्की करता है.

आशा है इस माह आप श्रमिक दिवस के अवसर पर अपने आसपास के श्रमिक साथियों को बधाई देंगे एवं उनसे उनके कौशल सीखने का भी प्रयास करेंगे.और हाँ, जिन साथियों का किलोल का वार्षिक सब्सक्रिप्शन समाप्त हो गया है या हो रहा है वे उसका नवीनीकरण करवा लें, ताकि आपको किलोल नियमित रूप से मिलती रहे.

आपका
आलोक शुक्ला

ये नभ के हैं न्यारे तारे

रचनाकार-महेंद्र कुमार वर्मा

शाम ढले नभ पे छा जाते,
सबको अपनी चमक दिखाते.

बड़े सवेरे सूरज आता,
उसे देख सारे छुप जाते.

उनकी गिनती करना मुश्किल,
इसीलिए अनगिनत कहाते.

सारी रात चमकते रहते,
नहीं काम से जी ये चुराते.

चंदा बदले रूप रोज ही,
ये जैसे हैं वही दिखाते.

ये नभ के हैं न्यारे तारे,
ये बच्चों का मन हर्षाते.

गर्मी आई

रचनाकार-पुष्पलता साहू

आई रे आई, गर्मी आई,
ठंडी आइसक्रीम मन को भाया.
छोड़कर अब कंबल रजाई,
कूलर पंखा मन को भाया.

खट्टे मीठे आम और अंगूर,
रसभरे तरबूज ने प्यास बुझाई.
लौकी कद्दू भिंडी और ककड़ी,
दादी का मन फिर ललचाया.

आग सी जल रही है धरती,
मौसम ने ली है अँगड़ाई.
पेड़ों पर लदे पलाश के फूल,
खेत है फिर से मुस्काया.

वो बचपन का जमाना था

रचनाकार-संतोष तारक

एक बचपन का जमाना था....
जिसमें खुशियों का खजाना था.
चाहत चाँद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दिखाना था.
खबर न थी कुछ सुबह की,
न शाम का ठिकाना था.
थककर आना स्कूल से,
पर खेलने जाना था.
माँ की कहानी थी,
परियों का फ़साना था.
बारिश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था.
रोने की वजह न थी,
ना हँसने का बहाना था.
वो बचपन का जमाना था.

पंचतंत्र की कथाएँ-संगठन की ताकत

वन में एक बहुत बड़ा अजगर रहता था. वह अभिमानी और अत्यंत क्रूर था. जब वह अपने बिल से निकलता तो सब जीव डर कर भाग खडे होते. एक बार अजगर शिकार की तलाश में घूम रहा था. सारे जीव तो उसे बिल से निकलते देख कर ही भाग चुके थे. उसे कुछ न मिला तो वह क्रोधित होकर फुफकारने लगा. निकट ही एक हिरणी अपने नवजात शिशु को पत्तियों के ढेर के नीचे छिपा कर भोजन की तलाश में गई थी.

अजगर के फुफकारने से सूखी पत्तियाँ उड़ने लगीं और अजगर की नजर हिरणी के बच्चे पर पडी. हिरणी का बच्चा उस भयानक जीव को देख कर इतना डर गया कि उसकी चीख तक न निकल पाई. अजगर ने देखते-ही-देखते हिरण के बच्चे को निगल लिया. तब तक हिरणी भी लौट आई थी, पर वह क्या करती? आँखों में ऑंसू भर कर दूर से अपने बच्चे को काल का ग्रास बनते देखती रही. हिरणी के शोक का ठिकाना न रहा. उसने किसी-न-किसी तरह अजगर से बदला लेने की ठान ली.शोक में डूबी हिरणी अपने मित्र नेवले के पास गई और रो-रोकर उसे अपनी दुख-भरी कथा सुनाई.

नेवले को भी बहुत दुख हुआ. वह दुख-भरे स्वर में बोला 'मेरे वश में होता तो मैं उस नीच अजगर के सौ टुकडे कर डालता. पर क्या करें, वह छोटा-मोटा साँप नहीं है, जिसे मैं मार सकूँ वह तो एक अजगर है. अपनी पूँछ की फटकार से ही मुझे अधमरा कर देगा. लेकिन यहाँ पास में ही चीटिंयों की एक बाँबी है. वहाँ की रानी मेरी मित्र हैं. उससे सहायता माँगनी चाहिए.'

हिरणी ने निराश स्वर में कहा "पर जब तुम उस अजगर का कुछ बिगाडने में समर्थ नहीं हो तो छोटी-सी चींटी क्या कर लेगी?"

नेवले ने कहा "ऐसा मत सोचो. उसके पास चींटियों की बहुत बडी सेना है. संगठन में बडी शक्ति होती है."

नेवला हिरणी को साथ लेकर रानी चींटी के पास गया और उसे सारी कहानी सुनाई.

रानी चींटी ने सोच-विचार कर कहा "हम तुम्हारी सहायता करेंगे. हमारी बाँबी के पास एक सँकरा नुकीले पत्थरों से भरा रास्ता है.तुम किसी तरह उस अजगर को उस रास्ते पर ले आओ बाकी का काम मेरी सेना पर छोड दो."

नेवले को अपनी मित्र रानी चींटी पर पूरा विश्वास था. दूसरे दिन नेवला अजगर के बिल के पास जाकर बोलने लगा. नेवले की आवाज सुनकर अजगर अपने बिल से बाहर आया. नेवला उसी सँकरे रास्ते की दिशा में दौडा. अजगर ने पीछा किया. इस प्रकार नेवला अजगर को सँकरे रास्ते पर ले आया. नुकीले पत्थरों से अजगर का शरीर छिलने लगा. जब अजगर उस रास्ते से बाहर आया तब तक उसके शरीर पर जगह-जगह से खून टपक रहा था.

उसी समय चींटियों की सेना ने अजगर पर हमला कर दिया. चींटियाँ उसके शरीर पर चढकर छिले स्थानों के माँस को काटने लगीं. अजगर दर्द से तड़पने लगा. वह चींटियों से बचने के लिए अपना शरीर पत्थरों पर पटकने लगा जिससे और भी जगहों पर माँस छिलने लगा और चींटियों उसपर आक्रमण करती रहीं. चींटियाँ हजारों की संख्या में अजगर पर टूट पड रही थीं. कुछ ही देर में क्रूर अजगर ने तडप-तडप कर दम तोड दिया. हिरणी का बदला पूरा हो गया था.

धरोहर अपनी कहानी लिए

रचनाकार- दीक्षा मिश्रा

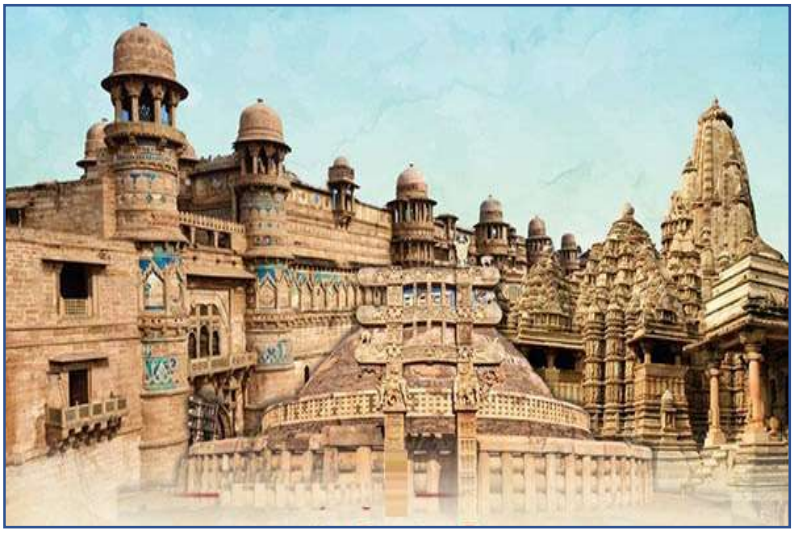

हर धरोहर अपनी निशानी लिए है.
हमारे अतीत की कहानी लिए है..

कहीं सदा वीरत्व दिखता रहा है.
कहीं रंग इतिहास छलका रहा है.
नए युग में गाथा पुरानी लिए है,
हर धरोहर अपनी निशानी लिए है..

कहीं पर संस्कृति मुस्कराती दिखेगी.
कहीं पर विरासत कहानी लिखेगी.
कभी न मिटे वो रवानी लिए है,
हर धरोहर अपनी निशानी लिए है..

कहीं साक्ष्य बनकर हम ही से मिलाए.
कहीं वीरगाथा विजय की सुनाए.
रिवाजों से सजी काल-रानी लिए है,
हर धरोहर अपनी निशानी लिए है..

खिलौने

रचनाकार-सुधा रानी शर्मा

मामा लेकर,
आया खिलौना.
बंदर-भालू,
तोता-मैना.

बिस्कुट-टाफी,
चना-चबैना.
खेले-खाएँ,
दोनों भाई-बहना.

अमराई

रचनाकार-टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

देखो अमराई को गौर से.
हर पेड़ लदा है बौर से..

पतियाँ तक ढँकी हुईं हैं.
मस्त महक बिखरी हुई है..

कीट-पतंगे झूम रहे हैं.
डाल-डाल को चूम रहे हैं..

कोयल रानी बनी मेहमान.
छेड़ रही है प्रीत की तान..

शांति-सुकून है अमराई में.
बड़े-बड़े गुण रुख-राई में..

हमारे पौराणिक पात्र- माता शबरी

माता शबरी का जिक्र आपने रामायण में सुना ही होगा आइए आज उनके बारे में विस्तार से जानते हैं.

शबरी का असली नाम श्रमणा था. वह भील समुदाय की शबर जाति से संबंध रखती थीं. इसी कारण कालांतर में उनका नाम शबरी पड़ा.

उनके पिता भीलों के मुखिया थे. श्रमणा का विवाह एक भील कुमार से तय हुआ था, विवाह से पहले कई सौ पशु बलि के लिए लाए गए. जिन्हें देख श्रमणा बड़ी आहत हुई.... यह कैसी परंपरा? इतने सारे निर्दोष जानवरों की हत्या की जाएगी... इस कारण शबरी विवाह से एक दिन पूर्व ही घर छोड़ कर चली गई और दंडकारण्य वन पहुँच गई.

दंडकारण्य में मतंग ऋषि तपस्या किया करते थे, श्रमणा उनकी सेवा करना चाहती थी पर वह भील जाति की थीं. इसलिए उन्हें सेवा का अवसर न मिलने का अंदेशा था. शबरी सुबह-सुबह ऋषियों के उठने से पहले उनके आश्रम से नदी तक का रास्ता साफ़ कर देती थीं, काँटे चुनकर रास्ते में साफ बालू बिछा देती थीं.यह सब वे ऐसे करती थीं कि किसी को पता भी नहीं चलता था.

एक दिन ऋषि श्रेष्ठ को शबरी दिख गई, उनके सेवाभाव से अति प्रसन्न होकर ऋषि ने शबरी को अपने आश्रम में शरण दे दी. जब ऋषि का अंत समय आया तो उन्होंने शबरी से कहा कि वे अपने आश्रम में ही भगवान राम की प्रतीक्षा करें, वे उनसे मिलने जरूर आएँगे.

मतंग ऋषि की मृत्यु के पश्चात् शबरी का समय भगवान राम की प्रतीक्षा में बीतने लगा.वे अपने आश्रम को एकदम स्वच्छ रखती थीं. रोज राम के लिए मीठे बेर तोड़कर लाती थीं. बेर में कीड़े न हों और वह खट्टा न हो इस लिए वह एक-एक बेर चखकर तोड़ती थी. ऐसा करते-करते कई साल बीत गए.

एक दिन शबरी को पता चला कि दो सुंदर युवक उन्हें ढूँढ रहे हैं, वे समझ गईं कि उनके प्रभु राम आ गए हैं.... उस समय तक वह वृद्ध हो चली थीं, लेकिन राम के आने की खबर सुनते ही उसमें स्फूर्ति आ गई और वह भागती हुई राम के पास पहुँचीं और उन्हें अपने साथ घर लेकर आई और उनके पाँव धोकर बिठाया.

अपने तोड़े हुए मीठे बेर राम को दिए राम ने बड़े प्रेम से वे बेर खाए और लक्ष्मण को भी बेर खाने को कहा. लक्ष्मण को जूठे बेर खाने में संकोच हो रहा था.राम का मन रखने के लिए उन्होंने बेर उठा तो लिए लेकिन खाए नहीं और बग़ल में फेंक दिए.मान्यता है कि राम-रावण युद्ध में जब शक्ति बाण का प्रयोग किया गया तो लक्ष्मण मूर्छित हो गए थें, तब इन्हीं बेर की बनी हुई संजीवनी बूटी उनके काम आयी थी.

माता शबरी ने पशुओं के जीवन को बचाने के लिए अपने सामाजिक जीवन का त्याग किया और सारा जीवन सेवा-भाव के साथ व्यतीत किया.परिणाम स्वरुप भगवान श्री राम ने न सिर्फ़ उन्हें दर्शन दिए अपितु माता कह कर उन्हें पुकारा. उनके जूठे बेर खा के उनकी श्रद्धा को स्वीकारा. आज भी कहीं भी राम कथा पढ़ी जाती है तो माता शबरी को श्रद्धा भक्ति के साथ याद किया जाता है.

गर्मी आई

रचनाकार-राजेंद्र श्रीवास्तव

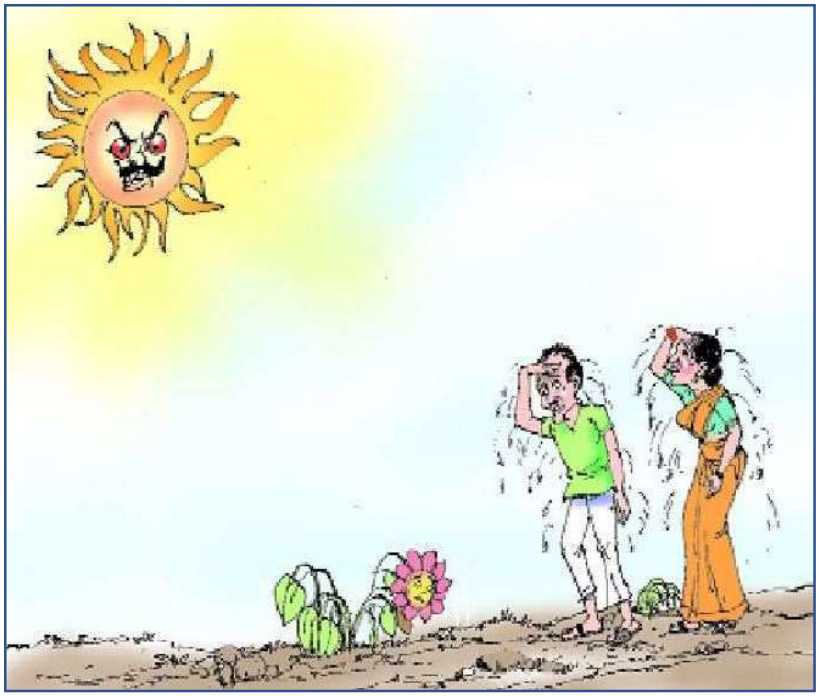

उफ! गरमी का मौसम आया,
तेज धूप से मन घबराया.
वन-उपवन में प्यासे पंछी,
खोज रहे पानी और छाया.

सूरज की किरणें झुलसातीं,
दया-भाव मन में न लातीं,
जिसने घर से कदम निकाले-
उसको तुरंत पसीना आया.

ए.सी.कूलर कोई चलाता
सीलिंग फैन कहीं घर्राता,
किसी-किसी को भली लग रही,
आम, नीम बरगद की छाया.

आइसक्रीम अहान को भाती
रानू कोल्ड ड्रिंक घर लाती
रोहन शरबत लेकर पीता,
परी को नींबू-पानी भाता.

टिया सयानी 'लू 'के डर से,
दोपहर में न निकलें घर से.
नन्हे हनु ने भी आँखों पर,
काला चश्मा आज लगाया.

प्रिंट रिच गांव, प्रिंट रिच वॉर्ड

रचनाकार-गोविंद पटेल

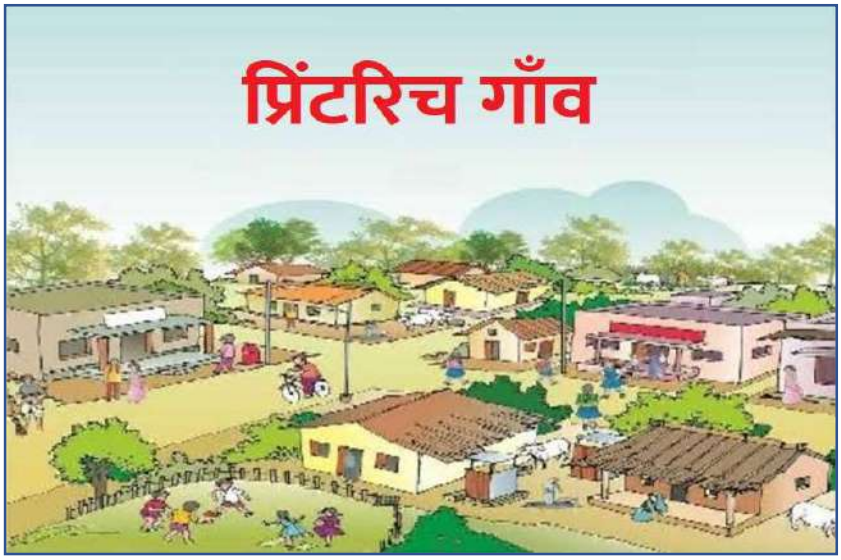

प्रिंट रिच वातावरण ने,
बना दिया गाँव को ही स्कूल.
हर बच्चा कोने-कोने से सीखे,
यही शिक्षक का ऊसूल.

शिक्षा देती हर गली,
सिखाती है हर दीवार.
हर खंभा भी बोल रहा है,
पढ़ लो मेरे लाल.

जहाँ होती है समस्या,
वहीं होता है समाधान.
दीवारें बन गईं ज्ञान का कोना,
अपने स्कूल जैसे लगने लगा.

अब गाँव का कोना-कोना,
खेल-खेल में मिल रही है शिक्षा,
गाँव की गलियों-दीवारों से शिक्षा.
खेलते-कूदते, उछलते-गाते.
अ-अनार सीख रहे बच्चे हँसते-गाते.

शिष्टाचार ज्ञान-विज्ञान की बातें,
सिखा रही है अब दीवारें.
आओ मिलकर करें प्रयास,
ताकि न रुके बच्चों का विकास.

मेरी धरती चमत्कारी

रचनाकार-कामिनी जोशी

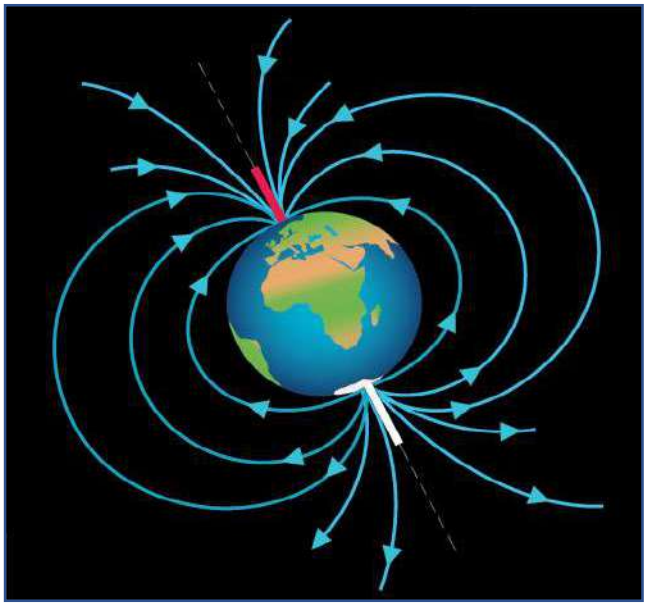

चुंबक है धरती हमारी,
जिससे हैरान दुनिया सारी.
एक युवक था बड़ा बुद्धिमान,
आइजैक न्यूटन था उसका नाम.

गया एक दिन टहलने बगीचा,
पेड़ के नीचे आराम करने सोचा.
जब बैठा वह पेड़ के बगीचे,
सेब आ गया उसके सिर के नीचे.

आगे देखा, पीछे देखा,
देखा ऊपर-नीचे,
सोचता रहा यह फल कैसे आया नीचे.

फिर क्या था न्यूटन ने भी फल फेंका ऊपर के ओर,
फल फिर से आ गया खिंचे धरती की ओर.
क्या है यह रहस्य, कैसा यह चमत्कार,
फल क्यों आता हैं नीचे बार-बार.

सोच-सोचकर यह पता लगाया.

खोजबीन कर यह बताया.
चुंबक बनकर धरती हमारी,
खींचे अपनी ओर वस्तुएँ सारी.

महतारी पूछय सवाल

रचनाकार-सोमेश देवांगन

मोर छत्तीसगढ़ महतारी ह पूछय फेर सवाल.
मोर हरियर अँछरा फेर होगे काबर लाल..

घर के दुश्मन घुन कस कीरा छाती छेदत हे.
दुलरुवा बेटा मन के जीव परान ल लेवत हे..

काबर अतका बाढ़त हावय घोर अत्याचार.
महतारी ला घलो आँखी देखावत हे दुराचार..

ये घुनहा बीमारी ले मोला घलो अब बचावव.
घर के बैरी दुश्मन ल खोज के मार गिरावव..

चूहा-चुहिया

रचनाकार-सुनीला फ्रेंकलीन

चूहा-चुहिया की हुई सगाई.
चुहिया चली आई बिन बिहाई..
आते ही उसने शर्त लगाई.
बनना होगा तुम्हें घर-जमाई..

चूहा बोला ले अँगड़ाई.
मंजूर मुझको राम-दुहाई..
चूहे को ले चुहिया आई.
सबको निमंत्रण भिजवाई..

दावत उन्होंने ख़ूब सजाई.
दावत में एक बिल्ली भी आई..
आकर उसने धूम मचाई.
कहाँ छुप गए दूल्हे-भाई..

तुम्हें ज़रा भी शर्म न आई.
बन गए हाय राम घर-जमाई..
ठहर, तुझे मैं मज़ा चखाऊं.
चूहा भागा और जान बचाई..

बिल्ली और पिल्ली

रचनाकार-सुबोध कुमार फ्रेंकलीन

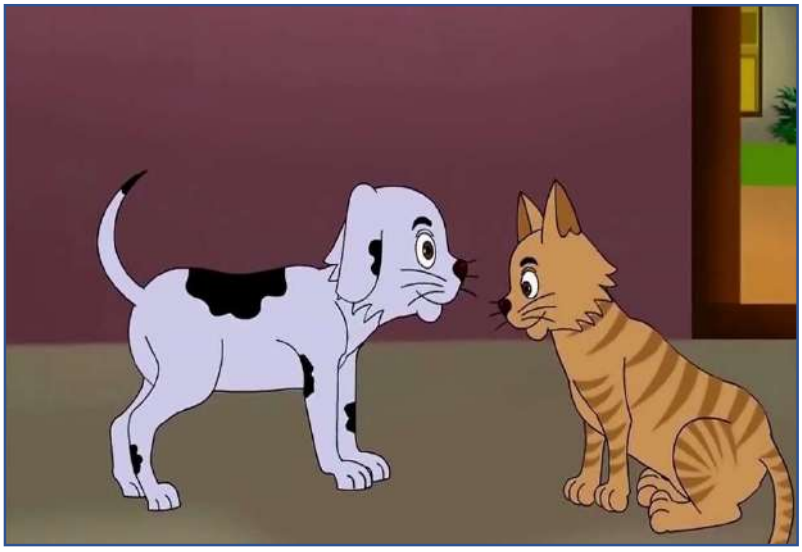

एक थी मोटी झबरी बिल्ली,
उसकी सहेली कुत्ते की पिल्ली.
नाम था उसका सिस्टर लिल्ली,
घूमने पहुँचे दोनों दिल्ली.

नेता की कर दी कुर्सी ढिल्ली,
चमचों ने एक लगाई किल्ली.
उनको मिला एक शेख-चिल्ली,
तीनों ने खाई फ़िर बर्फ-सिल्ली.

उसमें से निकली लम्बी इल्ली,
सब की उड़ गई ख़ूब खिल्ली.
फ़िर खरीदे तीन लड्डू तिल्ली,
खाकर खेले वो डण्डा-गिल्ली..

नारी शक्ति

रचनाकार-सपना यदु

चौका चूल्हा कपड़ा बर्तन.
रहती दिनभर की थकान..

गर्भ में शिशु, पर काम में जाती.
घर आकर फिर करती काम..

अपने सारे गम छुपाकर.
लाती सबके चेहरे पर मुस्कान..

पुरुषों से कहीं कम नहीं.
नारी तू तो है महान..

चीकू ने जब मिर्ची खाई

रचनाकार-सुरेखा नवरत्न

एक दिन चीकू खरगोश जंगल में घूम रहा था. उसे बहुत भूख लगी थी. भोजन तलाश करते हुए उसनें एक विचित्र पौधा देखा जिसमें कुछ हरे कुछ लाल नुकीले फल लगे हुए थे. भूख से परेशान चीकू ने एक फल तोड़कर खा लिया.

फल खाते ही चीकू को जैसे दिन में तारे दिखने लगे. उसकी जीभ में जैसे आग लग गई थी, कानों से धुआँ निकलने लगा. हाय... हाय करते हुए वह वहाँ से भागा.

अब चीकू सोच रहा था कि मैं ऐसा क्या खाऊँ जिससे यह जलन शांत हो. उसनें एक और पौधा देखा, जिसमें कुछ अलग तरह के फल लगे हुए थे. हरा-हरा, खुरदरा और लम्बा सा यह फल अनोखा लग रहा है इसे खाकर मेरी जीभ की जलन ठीक हो जाएगी. ऐसा सोचकर चीकू ने एक फल तोड़ा और खा लिया. जीभ का तीखापन तो ठीक हो गया लेकिन ये तो बहुत कड़वा है, थू.. थू... थू..... ये मैंने क्या खा लिया, अब मैं क्या करूँ? वहीं पास में ही उसे एक झाड़ दिखाई दिया. उसमें हरे पीले, गोल गोल फल लगे हुए थे. चीकू ने सोचा, यह फल बहुत खूबसूरत लग रहा है. यह जरूर स्वादिष्ट होगा. उसनें एक फल तोड़ा और खा लिया. जीभ की कड़वाहट ठीक हो गई लेकिन उसके दाँत खट्टे हो गए. चीकू को मजा नहीं आया.

चीकू आगे बढ़ा. रास्ते में उसनें एक खेत में सुन्दर पत्तियों वाले पौधे देखे. चीकू ने एक पौधा उखाड़ लिया, उसे एक अनोखी चीज मिली. अपने नुकीले दाँतों से काटकर थोड़ा सा खाया. उसे

उसका स्वाद बहुत अच्छा लगा. जलन भी नहीं हुई, कड़वाहट भी नहीं और खट्टापन भी नहीं. उसनें जल्दी जल्दी ढेर सारे फल खा लिए.

वाह! कितना मीठा है यह. चीकू का पेट भर गया उसे बहुत मजा आया.

बच्चो! क्या आप जान गए, चीकू ने कौन-कौन से फल खाए थे?

तीखा लगने वाला-मिर्ची

कड़वा लगने वाला-करेला

खट्टा लगने वाला-नीबू

और अंतिम वाला-गाजर

उस दिन से चीकू खरगोश को गाजर खाना बहुत अच्छा लगता है.

बिल्ली रानी

रचनाकार-खेमराज साहू

बिल्ली रानी बड़ी सयानी,
तुम खूब करती शैतानी.
कई चूहे पकड़े हैं उसने,
जैसे शेरनी की है नानी.
बिल्ली रानी बिल्ली रानी..

बिल्ली मौसी नाम जुबानी,
म्याऊँ-म्याऊँ है गाया करती.
हर चूहे पर रौब जमाती,
दूध-मलाई चाट कर खाती.
बिल्ली रानी बिल्ली रानी..

बिल्ली रानी करती मनमानी,
घर-घर ताक-झांक वह करती.
घूमे जैसे कोई महारानी,
दूर से आँखे ही चमकाती.
बिल्ली रानी, बिल्ली रानी..

बचपन से ही करे नादानी,
जल्दी से हाथ नहीं है आनी.
कूद-फांद की शुरू कहानी,
खुद को समझे शेर की नानी.
बिल्ली रानी बिल्ली रानी..

बेटी

रचनाकार-जितेन्द्र कुमार सिन्हा

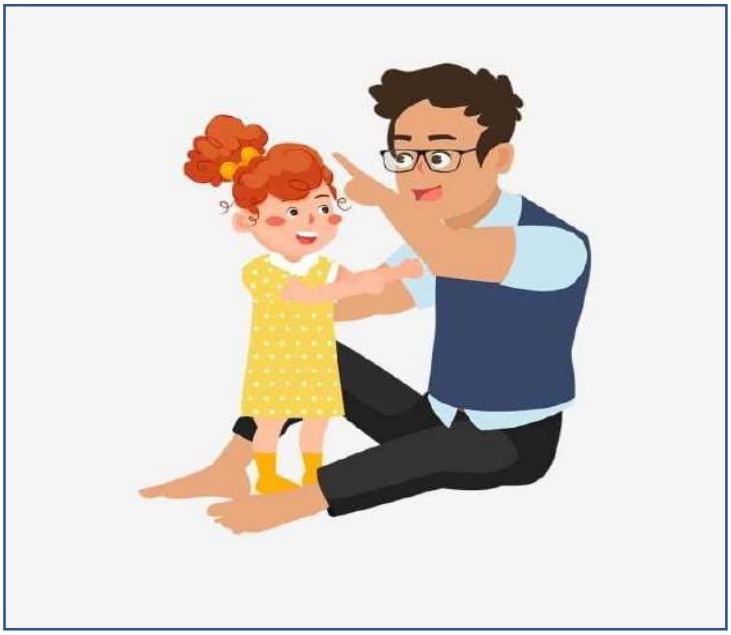

सुन बेटी,
तू चमक आसमान में सूरज बन,
तू दमक जहान में हीरा बन,
आँसू आँखों में खुद के लिए नहीं,
दूसरों के दर्द के लिए बहे,
तेरे खून का कतरा-कतरा
देश और देशवासियों के लिए बहे..

सुन बेटी,
तुझे उड़ना सिखा रहा हूँ,
दुनिया कैसी है दिखा रहा हूँ,
बदल दे ऐसी ख्वाहिश नहीं,
पर पंख लगा के सपने पूरे कर,
इसलिए फर्ज निभा रहा हूँ बेटी.

सुन बेटी,
कुछ रोकेंगे, कुछ टोकेंगे,
कुछ क़दमों में काँटे बोएंगे,
रुकना नहीं, झुकना नहीं
बन जा सूरज, दीपक बन बुझना नहीं.

सुन बेटी,
ममता का जादू है हाथों में,
बेबस न होना बातों में,
आइना जब भी देखना
सूरत नहीं हौसलों को देखना,
लंबे फासले हैं अभी जीवन के,
मुड़कर कभी न देखना.

सुन बेटी,
जब तेरे टपकते पसीने देखता हूँ,
हर पल आशीष तुम्हें देता हूं,
लिख दे एक इतिहास
हर पन्ने पर
स्याही तेरा पसीना हो.
वो किताब हमारे लिए नगीना हो..

ये गर्मी के मीठे फल

रचनाकार-सतीश उपाध्याय

फल हैं ये कमाल के,
सेहत रखें संभाल के.

गोल-गोल प्यारा तरबूज,
इसमें पानी रहता खूब.

लू से हमें बचाता है,
गर्मी में ही आता है.

मिनरल्स और विटामिन भी
ये सबको दे जाता है.

खरबूजा ठंडक पहुंचाता,
विटामिन-ए भी है लाता.

पाचक भी होता भरपूर,
लाता ये चेहरे पे नूर.

झटपट ऊर्जा देना काम,
ये फलों का राजा आम.

पना चटपटा चटनी भी,
इसमे भरे विटामिन सी.

काले और निराले जामुन,
खूब भरे है इसमें गुन.

इसमें आयरन पाया जाता,
तन को जो मजबूत बनाता.

देते सबको ताकत बल,
ये गर्मी के मीठे फल.

मेहनत का फल

रचनाकार-के.शारदा

एक गाँव में एक परिवार रहता था जिसमें माता-पिता और दो बच्चे चुन्नी और मुन्नू थे. दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे. चुन्नी अपने पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तकों को पूरा-पूरा पढ़ती थी. मुन्नू सिर्फ परीक्षा के समय ही महत्वपूर्ण प्रश्नों को याद कर लेता था और अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो जाता था.

एक बार दोनों ने अपने पिताजी से साइकिल खरीदने की माँग की. पिताजी ने कहा कि जो इस बार कक्षा में प्रथम आएगा उसे साइकिल दिलाएँगे. दोनों मान गए. चुन्नी परीक्षा के लिए तैयारी में जुट गई, वह पूरे पाठ्यक्रम की तैयारी में बहुत मेहनत कर रही थी.

मुन्नू उसको देख कर हँसता, कहता कि इतना पढ़ने की क्या जरूरत है?

वह हमेशा खेलता रहता था. परीक्षा का समय पास आ गया. अब मुन्नू ने 10 सालों के प्रश्नों को पढ़ना शुरू कर दिया. परीक्षाफल आया तो पता चला कि मुन्नू प्रथम आया है. पिताजी ने मुन्नू को साइकिल दिलाई. मुन्नी को साइकिल नहीं मिली उसे दुख तो हुआ परंतु अपने भाई की खुशी में खुश हुई.

गर्मी की छुट्टियों में वे दोनों अपनी नानी के घर गए. वे मेला घूमने गए थे, उन्होंने देखा कि वहाँ बच्चों के लिए एक सामान्य ज्ञान की प्रतियोगिता चल रही थी. चुन्नी और मुन्नू ने भी प्रतियोगिता में भाग लिया. कम समय में बहुत सारे प्रश्नों के उत्तर देने थे. प्रतियोगिता शुरू

हुई, प्रश्न पत्र देखते ही चुन्नू के चेहरे पर खुशी छा गई, उसे सारे प्रश्नों के उत्तर पता थे परंतु मुन्नू को कई प्रश्न समझ में नहीं आ रहे थे, क्योंकि वह कुछ प्रश्नों को ही पढ़ता था. चुन्नू सारे पाठ्यक्रम को पढ़ती थी इसलिए उसने प्रश्न-पत्र सरलता से हल कर लिया. मुन्नू कई प्रश्न हल नहीं कर पाया.

प्रतियोगिता में चुन्नी को प्रथम स्थान मिला. उसे 10 लाख रुपये की स्कॉलरशिप मिली. समाचारपत्रों में और टीवी में चुन्नी की प्रतिभा से संबंधित समाचार प्रकाशित हुए. सभी जगह चुन्नी की प्रशंसा होने लगी. माता-पिता सभी उसकी सफलता पर खुश थे.

पापा की गुड़िया

रचनाकार-प्रिया देवांगन "प्रियू"

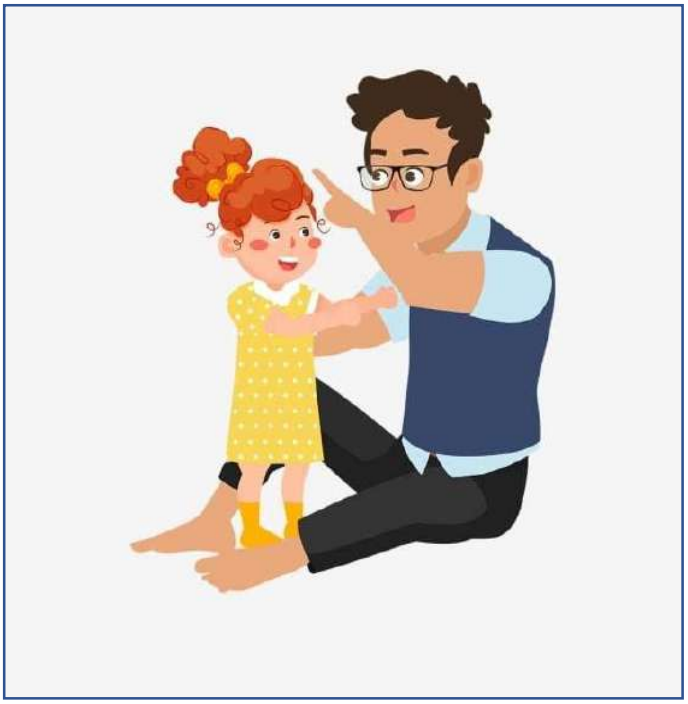

मैं पापा की गुड़िया रानी, मेरे अच्छे साथी थे.
खेल-खेल में हम दोनों भी, बनते घोड़े-हाथी थे..

छोड़ कभी न अकेले मुझको, साथ सदा ले जाते थे.
चाट-पकौड़े बड़े मजे से, पापा मुझे खिलाते थे..

प्यार दिये भरपूर मुझे वह, कहानी वह सुनाते थे.
रुठ जाती बातों पर मैं जब, आकर प्यार जताते थे..

कहाँ गए वो दिन भी सारे, याद बहुत अब आती है.
अब छोटी-छोटी बातें ही, मुझको बहुत रुलाती हैं..

क्यों करते हो ऐसा भगवन, कैसे अब विश्वास करूँ.
दूर किये खुशियों से अपनी, क्या तुमसे अब आस करूँ..

सपने देखे मिलकर दोनों, सारे सपने टूट गए.
हँसते-रोते दिन भी सारे, पीछे सारे छूट गए..

जब भी आता जन्मदिन पापा, साथ सदा मनाते थे.
गुब्बारे और आइसक्रीम, केक हमेशा लाते थे..

दूर हुए क्यों मुझसे पापा, याद बहुत ही आती है.
बात दिलों को छूने वाली, आँखें नम कर जाती है..

माँ

रचनाकार-अनिता चन्द्राकर

माँ ममता की मूरत होती, माँ होती भगवान.
माँ का स्थान अद्‌वितीय, माँ गुणों की खान.

माँ शब्द में संसार बसा है, माँ से बढ़कर कौन.
अद्‌भुत धैर्य वसुधा सा उनमें, सहती रहती मौन.

माँ धूप में शीतल छाया, स्नेह भरी पुरवाई माँ.
सर्द भोर में गुनगुनी धूप, हर रोग की दवाई माँ.

गंगाजल सी पावन होती, माँ पूजा की थाली.
गोद लगे सुखद बिछौना, माँ की बात निराली.

माँ नाम समर्पण का, वात्सल्य की निर्मल धारा.
खुश रहती सबकी खुशी में, होती सुदृढ़ सहारा.

अमृत रस पिला बच्चों को, वो आनंद भर देती.
दया प्रेम करुणा का पर्याय, माँ सबसे प्यारी होती.

छलक पड़े आँखों से आँसू, माँ की याद आते ही.
मुँह से निकलता है माँ, चोट जरा सा लगते ही.

माताओं के साथ एक कदम

रचनाकार-श्वेता तिवारी

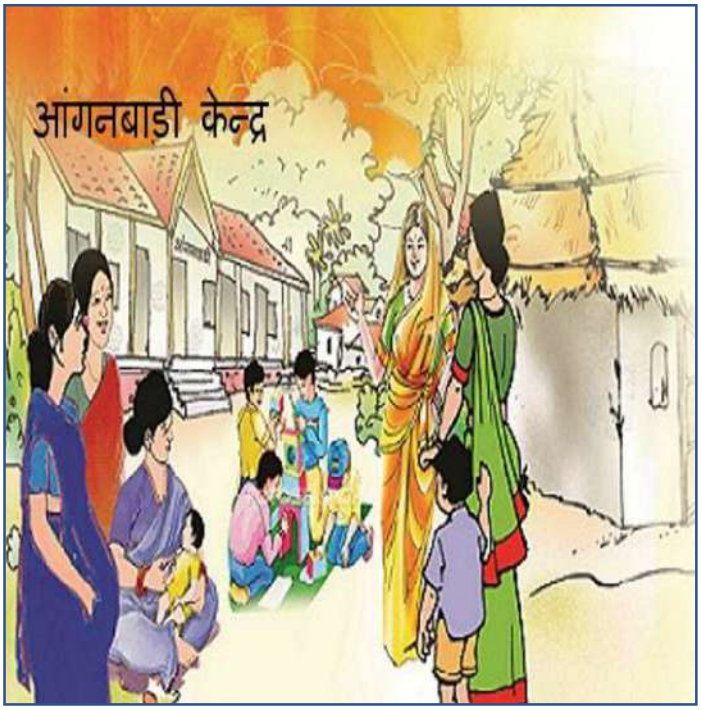

बेलगहना आदिवासी बाहुल्य वनांचल क्षेत्र है. वहाँ के शासकीय प्राथमिक विद्यालय में मैं पदस्थ हूँ. आज भी यहाँ शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी है. अध्यापन कार्य में विद्यार्थियों एवं पालकों के सहयोग के साथ में अपने विद्यालय में काम कर रही हूँ. विद्यालय कार्य के पूर्व में या विद्यालय कार्य के पश्चात मैं लगातार पालकों से संपर्क करती रही हूँ, विशेषकर माताओं के साथ. बच्चे विद्यालय में तो मन लगाकर पढ़ते हैं और कक्षा कार्य भी करके दिखाते हैं. समस्या तब आने लगी जब वही बच्चे गृह कार्य करके नहीं लाते. तब मैंने बच्चों के घर जाकर संपर्क करना आरंभ किया. पता चला कि उन्हें घर में पढ़ाई का माहौल नहीं मिल पाता है या कुछ बच्चों को गृह कार्य समझ में नहीं आता है और पालक उनका सहयोग नहीं कर पाते हैं क्योंकि वे स्वयं नहीं समझ पाते कि उन्हें बच्चों को क्या और कैसे पढ़ाना है. मैंने बच्चों की समस्या समझी. चार पाँच माताओं के समूह से बारी बारी संपर्क करने लगी. माताओं को घर में बच्चों को पढ़ाने के तरीके समझाने लगी. माताओं को विद्यालय से जोड़ने लगी. माताएँ धीरे-धीरे बच्चों की पढ़ाई के प्रति जागरूक हो रही हैं. अब की स्थिति में कुछ माताएँ बच्चों की समस्याओं से फोन पर मुझे अवगत कराती हैं. मैं उन्हें हल करने का हर संभव प्रयास करती हूँ. मोहल्ला कक्षा में बैठकर उनके साथ चर्चा करती हूँ. इसका बड़ा सकारात्मक परिणाम मुझे प्राप्त हो रहा है.शत प्रतिशत बच्चे पढ़ाई से जुड़ रहे हैं. मेरे विद्यालय की कक्षा पहली एवं दूसरी के बच्चे अँग्रेजी हिंदी शब्द पढ़ना सीख गए हैं और कई बच्चे पुस्तक पढ़ना आरंभ

कर चुके हैं. यह प्रयास जारी है. माताओं का भरपूर सहयोग मिल रहा है. कोरोना काल के समय मोहल्ला क्लास में बच्चों के साथ माताएँ भी जुड़ गई हैं और बैठकर पढ़ती समझती हैं जिससे घर में भी अपने बच्चों के साथ साथ आस पड़ोस के बच्चों को भी पढ़ा रही हैं. कहानी, भजन, जनउला खेल के माध्यम से कक्षा संचालित कर रही हूँ. माताएँ बेझिझक विद्यालय की ओर कदम बढ़ा रही हैं और जो भी समस्या आती है उसपर मिलकर चर्चा करती हैं और बच्चों की पढ़ाई के प्रति जागरूक होकर बच्चों को प्रतिदिन विद्यालय (मोहल्ला क्लास) की ओर भेज रही हैं.

जीव हरिया जाही

रचनाकार-ललिता लहरे

ठलहा काबर बइठे हस,
तैं गरियार बइला कस.
काबर नइ आवस बाबू
पुतरा-पुतरी खेले बर.

ललचावत हे मन हर मोरो
समोसा जलेबी खाये बर
ममा घर जावन नइ देवय
उनकर मन ले मिले बर.

गाड़ी-घोड़ा चलत नइ हे
ये डहर ओ डहर जाये बर
अड़बड़ जीव छटपटावत हावै
संगवारी के संग मिले बर.

स्कूल के अड़बड़ सुरता आथे
मन हर अड़बड़ गुदगुदाथे
संगी-संगवारी के बात मोला
अपन तीर रोज बलाथे.

कलेचुप चल दिही पीरा
लहुट के सुख ह आही रे
मन फेर हाँसही-गोठियाही
जीव हर हरिया जाही रे.

शहादत को सलाम

रचनाकार-श्रवण कुमार साहू

भारत माँ का बच्चा-बच्चा,
जब तेरी याद में रोया था.
ये मत पूछो तेरे पीछे किसने,
क्या-क्या अपना खोया था.

माँ की गोदी सूनी हो गई,
जिसमें तू नित खेला था.
घर आँगन भी सूने हो गये,
जिसमें सुख-दुख झेला था..
माँ की छाती छलनी हो गई,
जब आसमां भी रोया था.

घर का कुलदीपक था वो तो,
पिता का अभिमान था.
गाँव का भोला-भाला बेटा,
भारत माँ की शान था..
बाप की हिम्मत टूट गयी थी,
जिस दिन बेटे को खोया था.

मेहंदी का रंग उड़ गया,
जब कंगन चूड़ी टूटे थे.
हाय विधाता जिस दिन तूने,
माँग से सिंदूर लूटे थे..
बंधन टूटा, साथ भी छूटा,
जो बीज प्रेम का बोया था.

हाथ में रेशम की डोरी ले,
बहना जब ये पूछेगी
कब आएगा मेरा भैय्या,
कोई कील हृदय में चुभेगी
बहन की डोली उठाने वाला,
पता नहीं क्यों सोया था.

मासूम बच्चे जब यह कहते,
पिताजी कब आएंगे.
गुड्डा-गुड्डी,खेल-खिलौने,
मेरे लिए कब लाएंगे..
उस अनाथ को कौन बताए,
जिसने बचपन खोया था.

मेरे साथी,मेरे भाई,
क्यों तू मुझसे रुठ गया ?
तेरा मेरा खून का रिश्ता,
क्यों इतनी जल्दी टूट गया?
आज किशन ने बलदाऊ सा
प्यारा भैया खोया था.

मरते दम तक जिसने यारो,
दुश्मन से लोहा लिया था.
देश की शान बचाने खातिर,
अपने प्राण को खोया था..
अमर रहो ओ वीर जवानो
कहके हर कोई रोया था.

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

रचनाकार-सपना यदु

स्कूल में दाखिला दिला दो,
मैं भी पढ़ने जाऊँगी.
पढ़ लिखकर कर्तव्य करूंगी,
अपने सपने सजाऊँगी.

मरीजों की सेवा करके,
स्वस्थ उन्हें बनाऊँगी,
मां अपना आशीष दे दो
डॉक्टर बन के दिखाऊँगी..

क ख ग घ, A B C D
सबको मैं सिखाऊँगी.
पढ़ा-लिखा साक्षर बनाकर,
देश का भविष्य सजाऊँगी.

डॉक्टर, नेता, इंजीनियर, वकील
इन सब को शिक्षा दें,
शिक्षिका मैं कहलाऊँगी..

लालच का फल

रचनाकार-टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

"अरे रिनी, अभी तो तुम ने खाया है; फिर भी तुम्हे भूख लगी है. और कितना खाओगी?" राशि चिड़िया बोली.

"हाँ बहन, मम्मी ठीक कह रही है. पेट का भी ख्याल रखा करो. थोड़ा रूक जाओ. तब तक पापा जी भी कुछ न कुछ लेकर आते ही होंगे." नन्हे मीतू ने कहा.

"लो, तुम्हारे पापा भी आ गये." राशि ने बताया.

टिम्मू ने दोनों बच्चों के मुँह में पानी डाला. कहने लगा-"बच्चो! मैं पानी ही लाया हूँ, क्योंकि मुझे पता था कि तुम्हारी मम्मी तुम दोनों के लिए भोजन अवश्य लायेगी. अब तुम दोनों ने भोजन कर लिया; पानी भी पी लिया. चलो अब सो जाओ; हो गया तुम लोगों का डिनर." फिर टिम्मू और राशि ने एक-एक बच्चे को अपने-अपने डैने से ढँक लिया. कुछ देर में सबको नींद आ गयी.

सुबह हुई. टिम्मू व राशि के साथ बच्चे भी जाग गये. टिम्मू और राशि को लगा कि भोजन के लिए घोंसला छोड़ने से पहले बच्चों को कुछ खिलाया जाए. उन्होंने बच्चों को आम की कुछ कैरियाँ खिला दीं. फिर दोनों भोजन की तलाश में निकल पड़े.

टिम्मू और राशि को घोंसला छोड़कर गये कुछ ही समय हुआ था. तभी हवा चलने से कुछ कैरियाँ घोंसले पर गिरीं. ताजी कैरियाँ देखकर रिनी के मुँह में पानी आ गया. मीतू के मना करने पर भी वह कैरियों पर चोंच मारने लगी. इससे पहले दोनों भाई-बहन ने स्वयं से कभी कुछ नहीं खाया था. आज रिनी अपने प्रयास में सफल हो गयी. एक-दो कैरियाँ जब उसने खा लीं, तब मीतू ने फिर मना किया-"ज्यादा मत खाओ बहन. अभी ही तो मम्मी-पापा हमें खिलाकर गये हैं मेरी बात मान जाओ." परन्तु रिनी तो मानने वाली नहीं थी. उसने मीतू की एक न सुनी; और खाती गयी मन भर.

थोड़ी ही देर में रिनी के पेट में दर्द होने लगा. वह कराहने लगी. मीतू कहने लगा-"शांत रह बहन. मम्मी-पापा आते होंगे; वे ही कुछ उपाय करेंगे. सब ठीक हो जायेगा." मीतू रिनी को रोते देखकर दुःखी हो रहा था; पर क्या करता. वह रिनी को सहलाते हुए मम्मी-पापा की प्रतीक्षा करने लगा.

दोपहर में टिम्मू और राशि घर आये. रिनी को कराहते हुए देख कर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ. मीतू ने पूरी बात सविस्तार बताई. टिम्मू डॉक्टर नीलू नीलकंठ को बुलाकर ले आया. नीलू ने रिनी के बारे में पूरी जानकारी ली. उन्हें पूरी बात समझ में आ गई. उन्होंने कुछ पत्तियाँ देते हुए कहा-"आप इन्हें अच्छी तरह चबाकर रिनी को खिलाइए. ठीक हो जायेगी." टिम्मू-राशि ने डॉक्टर नीलू के कहे अनुसार रिनी को पत्तियाँ खिलाईं.

कुछ समय पश्चात रिनी ठीक हो गयी. टिम्मू व राशि की चिंता कम हुई. डॉ. नीलू ने रिनी को सलाह देते हुए कहा-"देखो रिनी, अगर तुमने मीतू की बात मान ली होती, तो तुम्हारी ऐसी हालत नहीं होती. पेट भर नाश्ता करने के बाद भी तुमने कैरियाँ खाई. तुमने लालच किया तभी तुम्हारी यह स्थिति हुई. तुम्हारे मम्मी-पापा समय पर मुझे नहीं बुलाते, तो तुम्हें और भी परेशानी होती. लालच बहुत बुरी बला है. लालच का फल हमेशा बुरा होता है." रिनी को सबक मिल गया.

मैं हूँ पानी

रचनाकार-प्रमिला जांगड़े

मैं हूँ पानी.
ना मेरा कोई रंग, ना मेरा कोई रूप.
फिर भी मेरी जरूरत है, चाहे ठंड हो या धूप.
मुझ में बसा है सारा संसार.
फिर भी
कोई क्यों नहीं करता मुझसे प्यार?

मैं हूँ पानी.
जहां मैं बहता हूँ, वहां मैं बहता ही रहता हूँ.
मेरी कीमत ना जाने कोई
जितना चाहे उतना सब मुझे फेंके.

मैं हूँ पानी.
जिस दिन हो जाऊंगा मैं अनमोल,
लोग मेरे लिए रोएंगे उस दिन.
हो जाऊंगा इस दुनिया से गोल.

मैं हूँ पानी.
जितना हो सके पेड़-पौधे लगा लो.
अभी भी वक्त है मुझे बचा लो.
मैं हूँ पानी.

हमारे प्रेरणास्रोत-रासबिहारी बोस

आओ बच्चो, आज हम चलते हैं अतीत के उस खंड में जब भारत की धरती पर चारों ओर लोगों में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ गुस्सा चरम सीमा पर था. यह साल था १९०५ का जब ब्रिटिश सरकार के वायसराय लार्ड कर्जन ने राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए बंगाल राज्य का विभाजन कर उसे दो हिस्सों में बाँटने का निर्णय लिया. बंगाल क्षेत्रफल और जनसँख्या दोनों ही दृष्टि से बहुत बड़ा राज्य था. पूर्वी बंगाल के कुछ प्रांतों को (जहाँ मुस्लिम आबादी ज्यादा थी) ब्रिटिश सरकार ने असम में शामिल करने का निर्णय लिया. सरकार के इस फैसले से पूरे बंगाल में गुस्से की लहर थी.

इसी समय बंगाल की धरती पर एक नौजवान क्रांतिकारी बड़ा हो रहा था जिनका नाम था रासबिहारी बोस. उनके दिल में भारत की आजादी का जूनून सवार था.

ब्रिटिश सरकार के इस फैसले से नाराज रासबिहारी बोस ने युगांतर नाम की एक संस्था का गठन किया. इस संस्था में बंगाल के मशहूर क्रन्तिकारी जतिन मुखर्जी, खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकी जैसे कई जवान शामिल हुए.

रासबिहारी बोस ने दिल्ली में तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना बनाई. २३ दिसम्बर १९१२ को जब दिल्ली में लार्ड हार्डिंग की सवारी चाँदनी चौक से निकाली जा रही थी तभी रासबिहारी के एक साथी बसंत कुमार विश्वास ने हार्डिंग की बग्घी पर बम फेंक दिया. हार्डिंग तो बच गया पर इस धमाके में उसके एक सेवक की मौत हो गयी. बसंत पकड़े गए. पुलिस से बचने के लिए रासबिहारी बोस रातों-रात रेलगाड़ी से देहरादून चले गए. अंग्रेजी प्रशासन को उन पर शक न हो इसलिए अगले दिन कार्यालय में इस तरह कार्य करने लगे मानो कुछ हुआ ही न हो. वे देहरादून के वन अनुसन्धान केंद्र में क्लर्क के पद पर कार्यरत थे. उस पद पर रहते हुए क्रन्तिकारी गतिविधियों को संचालित भी करते थे जिससे अंग्रेजी प्रशासन को उन पर शक न हो.

वायसराय के क़त्ल की योजना तो नाकाम हो गयी लेकिन इस घटना से ब्रिटिश शासन पूरी तरह हिल गया. अँग्रेज़ समझ गए थे कि अब भारत की जनता को ज्यादा दिनों तक गुमराह नहीं किया जा सकता.

बच्चो! यह प्रथम विश्वयुद्ध का समय था. इस युद्ध में पहली बार बड़े पैमाने पर अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग किया गया. युद्ध में एक ओर जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी तथा दूसरी ओर रूस एवं फ्रांस के सैनिक थे. इस युद्ध में बहुत बड़ी संख्या में मानव बल का भी प्रयोग हुआ. इस विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार फ्रांस और रूस का सहयोग कर रही थी. इसलिए ब्रिटिश सेना में शामिल भारतीय सैनिक बड़ी संख्या में इस विश्वयुद्ध में शामिल थे.

देश में ब्रिटिश सरकार के सैनिकों की कमी को देखते हुए रासबिहारी बोस ने सोचा कि ब्रिटिश सरकार को इस समय हराना आसान होगा. उन्होंने क्रांतिकारियों के साथ मिलकर सशस्त्र क्रांति की योजना बनाई. देश में ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का यह पहला व्यापक और विशाल क्रन्तिकारी प्रयत्न था. दुर्भाग्य से यह सफल नहीं हो सका. परिणाम विपरीत हुआ. कई क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया.

इस घटना के बाद ब्रिटिस सरकार की वांटेड लिस्ट में रासबिहारी का नाम सबसे ऊपर आ गया. उनके खिलाफ गिरफ़्तारी वारंट जारी कर दिया गया. गिरफ्तारी से बचे रहने पर ही संघर्ष जारी रखा जा सकता था. इसलिए जून १९१५ में गुप्त नाम से रासबिहारी जापान पहुँच गए. वहां पहुँचकर वे जापानी क्रांतिकारी मित्रों के साथ भारत की आजादी के लिए कार्य करने लगे..

रासबिहारी बोस ने सन १९१६ में जापान में ही एक रेस्तरां के मालिक और एशियाई समर्थक दंपति सोमा एजू और सोमा कोत्सुकी की बेटी से विवाह कर लिया. १९२३ में बोस को जापान की नागरिकता मिल गयी. उन्होंने जापानी अधिकारियों को भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन और राष्ट्रवादियों के पक्ष में खड़ा करने और भारत की आजादी की लड़ाई में उनका सक्रिय समर्थन

दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. जापान में उन्होंने अंग्रेजी अध्यापन, लेखन और पत्रकारिता का कार्य किया. उन्होंने रामायण का अनुवाद भी जापानी भाषा में किया.

सन १९४२ में जापान में मलय और बर्मा के साथ युद्ध हो रहे थे. उसी दौरान कई भारतीयों को युद्धबंदी के रूप में पकड़ा गया था. इन युद्धबंदियों को सैनिक बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया. रासबिहारी ने १९४२ में इंडियन नेशनल लीग की स्थापना की. आजादी के आन्दोलन को आगे सक्रिय रखने के लिए बाद में रासबिहारी ने सुभाष चन्द्र बोस को इसका अध्यक्ष बनाया.

बच्चो! रासबिहारीबोस एक प्रख्यात क्रान्तिकारी और आजाद हिन्द फ़ौज के संस्थापक थे. उन्होंने देश की आजादी का सपना देखा पर भारत की आजादी से पहले ही २१ जनवरी १९४५ को जापान के टोक्यो शहर में उनका निधन हो गया. इस तरह वे पहले भारत में रहकर फिर बाद में विदेश से देश की आजादी के लिए लड़ते रहे. उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत को आजादी दिलाने के प्रयासों में लगा दिया. भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में इनका नाम सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा.

रंग बदलते रिश्ते

रचनाकार-नंदिनी राजपूत

एक परी जिसके आने से घर में खुशियाँ छाई.
वह परी अपने आई-बाबा की लाडली कहलाई..

परी जब विद्यालय गई,दादा ने उंगली थामी.
शिक्षक ने भी हाथ फेरकर, सिखाया अ से अनार, ज्ञ से ज्ञानी..

दोस्त बनाने में उसको, लगता था इतना डर.
पता नहीं किस बिल में छुपा हो तरह-तरह के साँप भयंकर..

अ से आम, इ से इमली ने ऐसी स्वाद चखाई.
हँसते-खेलते, अठखेलियों से परी ने कदम बढ़ाई..

घर से बाहर जाने में, लगती थी इतनी पाबंदी.
दुनिया के गंदे माहौल, ना कर दे परी को गंदी..

माँ-बाप भाई का कड़ा पहरा, परी समझ ना पाई.
परी इन बातों से अनजान, रहती हरदम सकुचाई..

परी की मन की बात किसी ने समझ ना पाई.
अजनबी एक लड़के से कर दी गई उसकी सगाई..

परी का भी एक सपना था उसका दूल्हा हो राजकुमार.
जो उसको इतना प्यार दे कि भूल जाए मायके का दुलार..

शादी हुई वह भी घड़ी आई,
परी हुई मायके से पराई..

सब रिश्तो को खुश करने में लग गई वह दिन-रात.
जेठ-जेठानी, देवर-देवरानी भी रहते थे सब साथ-साथ..

हर रिश्ते ने अपना ऐसा रंग दिखाया.
बनावटी था जो रिश्ता कुछ दिन ही टिक पाया..

पति अपने काम में रहता ऐसा मशगूल.
परी को अपने से रखता हरदम दूर..

प्यार के एक बोल को तरसती थी हरदम.
सोचती थी कैसे काटेगी जिंदगी का हर पल

धीरे-धीरे पति ने अपना भयंकर रूप दिखाया.
मदिरा में मस्त होकर परी को आहत पहुंचाया..

सब दुखों को चुपचाप सहकर रोती हरदम आहिस्ता.
मांॅ-बाप के लाज के खातिर निभाती थी वो रिश्ता..

फिर परी ने एक दिन ऐसा कदम उठाया.
सब रिश्तो को छोड़कर मौत को गले लगाया..

कुदरत का यह खेल देखो मौत भी रास ना आया.
जीवन ने परी को फिर से गले लगाया.

कभी तो चौखट में खुशियाँ आएगी एक बार.
इसी उम्मीद में जी उठती थी वह बार-बार..

पर समय ने अपना ऐसा चक्र चलाया.
पति ने ही पत्नी के माथे पर कलंक लगाया..

पति का बेबुनियाद कलंक, परी को समझ ना आया.
जिसे देवता समझती थी उसने राक्षस रूप दिखलाया.

परी ने देखा था जो सपना आज वह चकनाचूर हुआ.
पति का साथ छोड़कर उसका मन मायके जाने को मजबूर हुआ..

भाई-भाभी की तानों ने परी को ऐसी चोट पहुंचाई.
मांॅ-बाप की थी जो लाडली वह बन गई फिर से पराई..

लड़की का घर कहीं नहीं, हर रिश्ते ने ये एहसास दिलाया.
दुनिया में कोई अपना नहीं, रंग बदलते रिश्ते ने ही सिखलाया..

अपमान मत करना नारियों का, इनके बल पर जग चलता है.
पुरुष जन्म लेकर तो इन्हीं की गोद में पलता है..

सब दुखों को भूलकर नारी आगे कदम बढ़ाएगी.
जीवन तो जीना ही है यह सोच कर वह फिर से मुस्कुराएगी..

जिसका कोई नहीं उसका खुदा है यह सबको बतलाएगी.
फिर भी क्या यह समाज परी को चैन से जीने दे पाएगी????

बाबा भीमराव अम्बेडकर

रचनाकार-वसुंधरा कुर्रे

बाबा भीमराव, बाबा भीमराव
तू ही है संविधान का शिल्पकार.
बाबा भीमराव, बाबा भीमराव,
तू ने ही बनाया भारत का संविधान.

बाबा भीमराव, बाबा भीमराव,
सबको दिया समानता का अधिकार.

ऊंच-नीच, जात-पात, छुआछूत को,
जड़ से मिटाने का दिया अधिकार.

बाबा भीमराव, बाबा भीमराव,
पुरुष के समान महिला को भी दिया,
शिक्षा का समान अधिकार.

बाबा भीमराव, बाबा भीमराव,
किसी पर शोषण ना हो,
किसी पर अत्याचार ना हो,
सबको दिया धर्म, संस्कृति एवं शिक्षा की स्वतंत्रता का अधिकार.

बाबा भीमराव, बाबा भीमराव
आज शिक्षित है बेटियां.
छू रही है धरा आसमां,
स्वतंत्र है बेटियां,
मिला सबको ऐसा अधिकार.

बाबा भीमराव, बाबा भीमराव,
संविधान में लिख दिया हर मानव के लिए हर अधिकार.

हम करते हैं बाबा आपको,
बारंबार नमन, प्रणाम और नमस्कार.

गर्मी के दिन आगे

रचनाकार-कन्याकुमारी पटेल

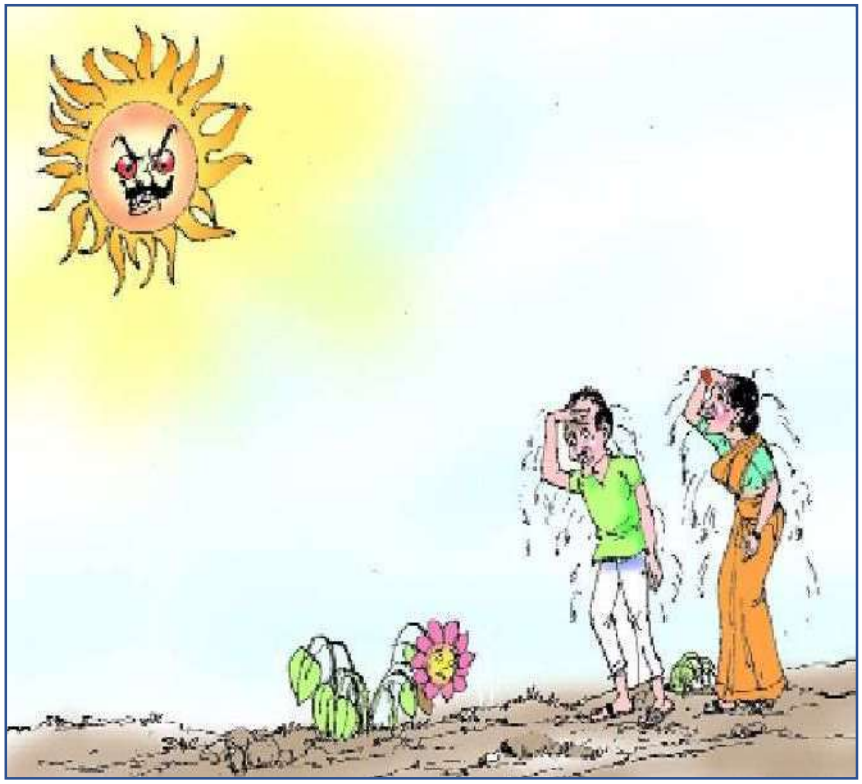

गरमी के दिन आगे भाई, टोंटा गजब सुखावत हे.
बिन पानी के जीव-जंतु सब,रुख-राई घलो मुरझावत हे.
लकलक भोंभरा जरत हावै, सूरुज अंगरा बरसावत हे.
पों-पों करत कुल्फी वाला, लईका ला बुलावत हे.

गरमी मा तो चूर गे मुँह ह, साग-पान नइ मिठावत हे.
आमा चटनी संग बोरे बासी, अमली के लाटा सुहावत हे.
थोरकिन काम-बूता मा,पछिना गजब चूचवावत हे.
पंखा कूलर, ए सी-वे सी,अपन तीर मा बलावत हे.

करसी पानी, केकरी-कलिंदर, गजब तो सुहावत से.
पक्का आमा,खीरा, खरबूज,सब के मन ल भावत हे.
तरिया नदिया नरवा के पानी कऊखन अब अंटावत हे.
पानी बचाओ, पानी बचाबो, कहिके सबो चिल्लावत हे.

सब झन जुरमिल के भैया, आओ पेंड लगाबोन.
पर्यावरण के रक्षा करबोन, पानी के सोत बढ़ाबोन.

सच्ची श्रद्धांजलि

रचनाकार-श्रवण कुमार साहू "प्रखर"

मेरे धरती को रंग दिया,
आज फिर से लाल रंग में.
क्या तकलीफ है इतना बता,
तुझे रहना मेरे संग में..

कौन सा तेरा कौम है,
और क्या है धरम और जात.
मेरे सरफ़रोशों के आगे,
बता क्या है तेरी औकात..

क्या मिलता है तुझे बता,
नफरत के इस जंग में.
दंडकारण्य की घाटी में,
तूने क्यों किया नरसंहार.

वीर साहसी हो नहीं सकता,
तू कायर है,तू गद्दार..
छिपकर वार किया है तूने,
दर्द दिया अंग-अंग में.

कब तक चलती रहेगी,
तुम्हारी ऐसी दानवीवृत्ति.
जयचन्दों अब बन्द करो,
शहादत पर राजनीति..

क्या एकजुट नहीं रह सकते,
मुसीबत के सामने.
छ.ग.के इस मिट्टी से,
कब खत्म होगा नक्सली.

वीर शहीदों को मिलेगी,
तभी सच्ची श्रद्धांजलि..
तभी राष्ट्र खुशहाल बनेगा,
जीना होगा संग-संग में.

रानीकीड़ा

रचनाकार-वाणी मसीह

हमारे बचपन मे जब पहली बारिश होती थी, मिट्टी की सौंधी खुशबू के बीच हम बारसुर (जिला दंतेवाड़ा) में अपने स्कुल के मैदान में रानी कीड़ा ढूँढने निकल पड़ते थे. रानी कीड़ा चटक लाल रंग की मखमली पीठ वाला एक छोटा सा कीड़ा होता था. जो आजकल दिखाई नही देता है. मैदान मे लाल रंग के कुछ बडे और कुछ छोटे आकार के रानी कीड़े घूमते रहते थे. बहुत सुंदर दिखने के कारण हम उसे रानी कीड़ा कहते थे. सीधे-सादे कीडे. हम जब उन्हे पकड़ने की कोशिश करते तो वो अपने पैर मोड़कर छुपा लेते थे. हम उन्हें अपने हाथो पर चला कर सबको स्वयं का साहस दिखाते कि देखो मैं नहीं डरती और फिर उन्हे उसी मैदान में छोड़ दिया करते थे. आजकल बहुत ढूँढने पर भी रानीकीड़ा दिखाई नही देता है.

वक़्त है साहब, गुजर जाएगा

रचनाकार-यशवन्त कुमार चौधरी

साहब कहते है उसके दर पर देर है अंधेर नहीं.
जहाँ उसकी झोली में दुःख-दर्द है,
वहीं सुख-शांति की पोटली भी तो साथ है.
आज परिस्थितियों की बयार प्रतिकूल है तो क्या हुआ,
पिछले कल की अनूठी गुदगुदी भरी यादों के सहारे ही सही.
इस वक्त को मात देने की साहस तो रखते ही हैं जनाब.
देखना ए दोस्त,वह भी यह मंजर देख हैरान-परेशां रह जाएगा.
वक्त की मार के साथ नई सीख लेने का हुनर जो हमें आ जाएगा.
हमें ही देख लो, किसी मिसाल से कम नहीं,
जीवन में हमारी भी परेशानी कम नहीं.
चौराहे पर धैर्यता के साथ खड़ी है जिन्दगी,
न घर-न दौलत-न शोहरत,
फिर भी संतानों के सुनहरे भविष्य के लिए,
उम्मीद भरी निगाहें टकटकी लगाएँ हैं.
इस लगन और आत्मविश्वास के साथ,
कि खोने को है नहीं कुछ,
पाने को है सारा जहाँ.

क्योंकि उम्मीदों-आशाओं की नौका पर सवार है जिन्दगी,
लहर रूपी जीवन में बिना संघर्ष कोई,
नौका रुपी लक्ष्य पार नहीं होती.
चाहत भरी नज़रों की कोशिशें बेकार नहीं होतीं.
राहें मिली हैं तो मंजिल भी मिल ही जाएगी,
और ये वक्त है साहब बदल जरुर जाएगा.
हो अगर दिल में जीने की नेक फितरत,
तो दुनिया की कोई कायनात रोक नहीं सकती.
अपनी क्षमता पहचान करें कुछ नेक काम,
आइए अपने हौसले को एक नई ऊँचाई दें.

<u>नानपन के मोर गॉव</u>

रचनाकार-संतोष कुमार तारक

ददा के मया दुलार,मोर दाई के अछरा के छांव.
याद आथे संगी मोला, नानपन के मोर गॉव..

पेंड़ तरी खेलन भोटकउला.
गउ दइहान के गिल्ली अउ डंडा..
आषाढ़ के पानी, अउ कागज के मोर नांव.....

याद आथे संगी मोला नानपन के मोर गॉव..
लकड़ी के बने, राईचुली ढेलउवा.
बइला चरई अउ, डंडा कोलउवा..

होत बिहनिहा कुकरा बासय, अउ कउंआ करे कांव कांव.....
याद आथे संगी मोला नानपन के मोर गॉव..

स्कूल ले आके, तरिया म तउड़ई.
कागज के बने, पतंग उड़ई..
ओ टेड़गा रुख, अउ मोर छोटे-छोटे पांव.
याद आथे संगी मोला नानपन के मोर गॉव..

ददा के मया दुलार,मोर दाई के अछरा के छांव.
याद आथे संगी मोला नानपन के मोर गांव..

मेरा सपना

रचनाकार-मनोज कश्यप

मित्र मिलकर आओ देखे सपना,
साथ चले.

हितकर बनकर कार्य करेंगे,
नहीं छले.

सब अपने है हम सबके है,
सोच रखें.

प्रेम, एकता, भाई-चारा कल्प तले,
बड़ी सोच लेकर चलता जो,
डटे रहे.

आँधी में भी दीप जले ज्यों,
चुप्प सहे.

बन्द पलक में सपने पलते रातो में,
कर्मक्षेत्र श्रम पूर्ण करे तब बात कहे.

सपनो में संसार सुहाने लगते है,
चांद सितारे साथ हमारे चलते हैं.

बचपन वापस और बुढ़ापा मिलते है,
स्वप्न परी से आंख मिचौली करते है.

स्वप्न अधूरे रह जाते है मेले में,
मिलन विरह के चक्र व्यूह फँस खेले में.

मनसूबे दिल मे रह जाते कौन सुने,
जन्म मरण का कारण,
अंतिम बेले में, अंतिम बेले में..

चार पहरेदार

रचनाकार-श्वेता तिवारी

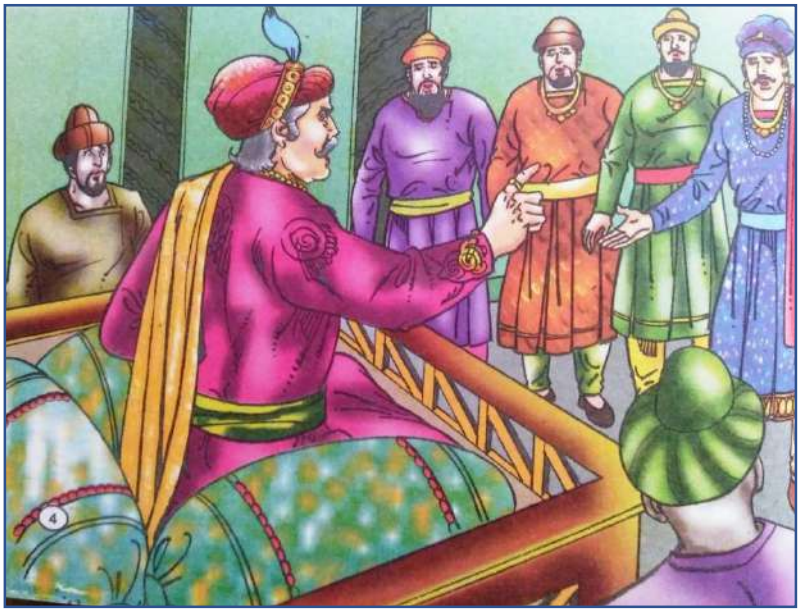

एक राजा था, उसका नाम था चंद्रसेन. उसका राज्य बहुत दूर तक फैला हुआ था. उसकी प्रजा बहुत सुखी थी. राज्य में कोई परेशानी नहीं थी चंद्रसेन के राज्य से सटा एक छोटा सा राज्य था जिसका राजा मानिकचंद था. उस राज्य में आए दिन कलह झगड़े होते थे प्रजा बहुत परेशान और दुखी थी. एक दिन राजा मानिकचंद, राजा चंद्रसेन के पास आया. उसने अपनी समस्या बताई और चंद्र सेन के राज्य की खुशहाली का राज पूछा. चंद्रसेन हँसा और बोला-मेरे राज्य में खुशहाली का कारण यह है कि मेरे पास 4 पहरेदार हैं, जो हर समय मेरी रक्षा करते हैं. मानिक चंद ने कहा आप चार पहरेदारों से कैसे काम चला लेते हैं. मेरे पास तो पहरेदारों की फौज है. राजा ने कहा मेरे चार पहरेदार हैं सत्य जो मुझे झूठ नहीं बोलने देता, प्रेम जो मुझे घृणा से बचाता है, न्याय जो मुझे अन्याय नहीं करने देता और त्याग जो मुझे स्वार्थी नहीं होने देता. मानिकचंद की शंका का समाधान हो गया और कुछ समय बाद राजा मानिकचंद की प्रजा भी खुशहाल रहने लगी.

अखबार के पन्नों से

रचनाकार-श्रवण कुमार साहू,"प्रखर"

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में नक्सली अटैक

24 शहीद
31 घायल

20 से अधिक हथियार लूटे

बीजापुर मुठभेड़ के बाद 20 से ज्यादा हथियार जवानों के शव के पास से नहीं मिले हैं. नक्सली जवानों की हत्या करने के बाद हथियार लूट ले गए हैं. हमले का मास्टरमाइंड बटालियन नंबर 1 का हेड हिडमा है.

2,059 जवान थे हिडमा की तलाश में

बीजापुर से करीब 75 किमी दूर तर्रेम थाना क्षेत्र सिलगेर गांव के पास के जंगल में नक्सलियों की बटालियन नंबर एक के कमांडर दुर्दांत नक्सली हिड़मा की मौजूदगी की सूचना मिल रही थी. इस

नवभारत न्यूज नेटवर्क

बीजापुर. नक्सल प्रभावित तर्रेम थाना क्षेत्र के जोन्नागुड़ा के जंगल में शनिवार दोपहर पुलिस व नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ में कुल 24 जवान शहीद हुए हैं. रविवार दोपहर तक 24 शव निकाले जाने की बीजापुर एसपी कमलोचन कश्यप ने पुष्टि की है. डीजीपी डीएम अवस्थी ने कहा कि

यूँ अखबार पढ़ने में,अनजाना-सा डर लगता है.
हर पन्ने पर कोरोना का,खूनी खेल ही छपता है..

अखबार छूते ही मन में,कुछ घुटन-सा लगता है.
खबर ही खबर देख, अंतर्मन टूटने-सा लगता है..

हर तरफ वही खबरें, हर तरफ करुण चित्कार है.
कहीं संतोष मिलता नहीं, हर तरफ धिक्कार है..

हर एक पृष्ठ पर दर्द छपा है, हर एक पेज पर व्यथा है.
कौन किसका आँसू पोंछे, सबकी एक-सी कथा है..

सबके सपनों के घरौंदे, मानो अब टूट रहे.
अपने पराये लोग सभी, एक-एक करके छूट रहे..

मौत के नर्तन के आगे, देख हर एक आदमी रो रहे.
चुनावों के राग अलापे, राजनेता भीड़ में खो रहे..

गांव शहर लाकडाउन हो गया, बन्द पड़ी मजदूरी.
महंगाई को सर पे ढोना, है बेबसी और मजबूरी..

रागरंग जीवन,उत्सव, अब कहीं भी दिखता नहीं.
बच्चों की छोटी-छोटी खुशियाँ, बाजारों में बिकती नहीं..

आखिर क्यों लोग तुम्हें पढ़ें, बस इत्ती बात बता दे.
मेरी खुशियां कहीं खो गई, जा उसे घर का पता दे..

अखबार के पन्नों से, फिर निकली करुण पुकार.
दुष्ट-दनुज के नाश हेतु, फिर धरो दिव्य अवतार..

हे प्रभु! एक ही प्रार्थना, कोई अच्छी-सी खबर दे.
रोज अखबार पढ़े फिर, बेफिक्री और बेखबर दे..

रक्षा करो माँ

रचनाकार-सोमेश देवांगन

आयी नवरात्रि माता, जगमग जोत जले.
विपदा घोर आन पड़ी माँ, बच्चें कैसे पले..

त्राहिमाम माँ पुकार रहा, पूरा जग संसार.
कोरनोसुर दानव से माँ, रक्षा करो हमार..

रक्त बीज बन कोरोना, पल-पल बढ़ता जाए.
जो सामने उसके आये, साथ में लेता जाए..

कोरोनासुर दानव माँ, छुप के करता वार.
जो सामने आये उसके, कर देता वो बीमार..

अज्ञानी बालक माँ, घोर विपदा आन पड़ी है.
अपने को हम छू नहीं सकते, कैसी ये घड़ी है..

माँ शैलपुत्री रूप धर, अब लो माँ अवतार.
कोरोना रूपी दैत्य का भी, करो अब सँहार..

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

आकाश और क्रिकेट

छठी कक्षा का छात्र आकाश क्रिकेट का अच्छा खिलाडी है. आसपास कहीं भी कोई मैच हो और आकाश वहाँ न हो ऐसा नहीं होता है. और जिस दिन टीवी पर कोई क्रिकेट मैच आ रहा हो उस दिन तो वह मैच के शुरू होने से लेकर समाप्त होने तक टीवी के सामने से हिलता तक नहीं. सारा ध्यान क्रिकेट पर होने के कारण पढ़ाई में आकाश पिछडता जा रहा है. इसबार के पालक बालक सम्मेलन में जब शिक्षक ने आकाश के माँ पिताजी को आकाश के पढाई में पिछड़ने की बात बताई तो वे दोनों चिंतित हो गये. रात को खाने के बाद पिताजी ने आकाश से उसकी पढ़ाई के बारे में पूछा तो आकाश ने उत्तर दिया कि वह तो क्रिकेटर बनेगा और पढ़ाई में उसकी क़ोई ज्यादा रुचि नहीं है. पिताजी ने आकाश को समझाने की कोशिश की और कहा कि पढ़ाई भी तो जरूरी है. आकाश का उत्तर था कि आजकल तो सभी कहते हैं कि जीवन में वही करना चाहिए जिसमें रुचि हो. अगर मेरी रुचि क्रिकेट में है तो मैं अपना पूरा ध्यान क्रिकेट पर ही क्यों न लगाऊँ? क्रिकेटर बनने के लिए पढ़ाई करने की क्या जरूरत है? उसके लिए तो खेल का अभ्यास ही करना होगा.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

कन्याकुमारी पटेल द्वारा पूरी की गई कहानी

छठी कक्षा का छात्र आकाश क्रिकेट का अच्छा खिलाडी है. आसपास कहीं भी कोई मैच हो और आकाश वहाँ न हो ऐसा नहीं होता है. और जिस दिन टीवी पर कोई क्रिकेट मैच आ रहा हो उस दिन तो वह मैच के शुरू होने से लेकर स माप्त होने तक टीवी के सामने से हिलता तक नहीं. सारा ध्यान क्रिकेट पर होने के कारण पढ़ाई में आकाश पिछडता जा रहा है. इसबार के पालक बालक सम्मेलन में जब शिक्षक ने आकाश के माँ पिताजी को आकाश के पढाई में पिछड़ने की बात बताई तो वे दोनों चिंतित हो गये. रात को खाने के बाद पिताजी ने आकाश से उसकी पढ़ाई के बारे में पूछा तो आकाश ने उत्तर दिया कि वह तो क्रिकेटर बनेगा और पढ़ाई में उसकी क़ोई ज्यादा रुचि नहीं है. पिताजी ने आकाश को समझाने की कोशिश की और कहा कि पढ़ाई भी तो जरूरी है. आकाश का उत्तर था कि आजकल तो सभी कहते हैं कि जीवन में वही करना चाहिए जिसमें रुचि हो. अगर मेरी रुचि क्रिकेट में है तो मैं अपना पूरा ध्यान क्रिकेट पर ही क्यों न लगाऊँ? क्रिकेटर बनने के लिए पढ़ाई करने की क्या जरूरत है? उसके लिए तो खेल का अभ्यास ही करना होगा

उस समय तो पिताजी ने आकाश को कुछ और नहीं कहा, पर मन ही मन वे बहुत चिंतित हो गये कि इसे कैसे समझाया जाए. दूसरे दिन पिताजी आकाश के खेल शिक्षक से मिले,उन्होंने सारी बातें और पढ़ाई के प्रति आकाश की सोच बताई और अपनी चिंता व्यक्त की. खेल शिक्षक ने कहा कि आप चिंता न करें सब ठीक हो जाएगा. अगले दिन खेल शिक्षक आकाश की कक्षा में आए और गणित पढ़ाने लगे.आकाश को अजीब लगा, उसने पूछ ही लिया कि आप गणित क्यों पढ़ा रहे हैं? आप तो खेल के शिक्षक हैं न? शिक्षक हँसने लगे और बोले कि गणित के शिक्षक का स्वास्थ्य ठीक नहीं है,इसलिए मैं पढ़ा रहा हूँ. हाँ मैं खेल का शिक्षक हूँ पर खेल के साथ-साथ अन्य विषयों में भी मेरी रुचि है.

यह सुनकर आकाश सोच में पड़ गया. शाम को जब पिताजी घर आए तो आकाश को पढ़ता देख मुस्कुरा उठे.

सुधारानी शर्मा द्वारा पूरी की गई कहानी

आकाश के पापा ने उसे समझाया कि खेलना जितना जरूरी है पढाई भी उतनी ही जरूरी है. खेलने के लिए भी तुम्हे घर से दूर जाना होगा, हॉस्टल में रहना, दूसरे राज्यो, देशों के लोगों से मिलना होगा.

दुनिया को जानने के लिए आपको बैंकिंग, नेटवर्क, टिकट बुकिंग, खेल की तकनीक समझना पड़ेगा आजकल कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल इन सब चीजों के लिए पढ़ाई जरूरी है. यह सबकुछ पढ़ाई से ही सीख सकते हो. खेल का, पढ़ने का, सभी का महत्व होता है.खेल और पढ़ाई दोनों ही जीवन के अभिन्न अंग है

आकाश को अब समझ में आ गया कि पढ़ाई का जीवन में क्या महत्व है. उसने कहा आज से मैं खेल के साथ पढ़ाई भी करूँगा.

आकाश के पापा बहुत खुश हुए और उन्होंने कहा, मैं तुम्हे खेल के लिए सारे साधन उपलब्ध करा दूँगा.

अब आकाश पढ़ाई और खेलकूद, दोनों में अच्छे से ध्यान देने लगा है.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

आकाश के पिताजी ने मन ही मन सोचा कि अपने शिक्षक दोस्त रमाकांत की सलाह से इस समस्या का हल ढूँढने में मदद मिल सकती है. आकाश को अपने साथ लेकर वे रमाकांत के घर पहुँचे. रमाकांत उन दोनों को देखकर खुश हुए और आकाश से उसकी पढ़ाई के बारे में पूछा. आकाश ने उत्तर दिया अंकलजी पढ़ाई में मेरी रुचि नहीं है, मुझे क्रिकेटर बनना है, उसके लिए पढ़ाई की क्या जरूरत है?

आकाश के पिताजी ने रमाकांत को आकाश के बारे में पूरी जानकारी दी और कहा कि यही समस्या लेकर आपके पास आया हूँ. इसका हल निकालिए.

ञरमाकांत ने कहा-चलो हम लोग पास में ही किशन के कृषि फार्म पर चलते हैं. किशन अपने फार्म में वैज्ञानिक उपकरण से खेती करते हैं. विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ, धान, चना, गेहूँ आदि फसल उगाते हैं.

आकाश चारों ओर हरियाली देखकर खुश हो गया. पूरे फार्म का भ्रमण करते हुए उसने देखा कि मजदूर विभिन्न औजारों के साथ अपने-अपने काम में लगे हुए हैं.किशन स्वयं ट्रैक्टर से खेत की जुताई-बुआई का कार्य कर रहा है. आकाश उसे देखकर अपने पिताजी और अंकल से बोला कि देखो किशन अंकल खेत की जुताई एवं बुआई का कार्य कर रहे हैं. पूरा फार्म मुझे बहुत ही अच्छा लगा. तभी रमाकांत कहते हैं-बेटा आकाश ये मेरे दोस्त जो ट्रैक्टर चला रहे हैं तुम्हारे अंदाज से कितने पढ़े-लिखे होंगे. आकाश ने उत्तर दिया ज्यादा से ज्यादा पांचवी-आठवीं तक पढ़ाई की होगी.ट्रैक्टर चलाने एवं खेती करने के लिए ज्यादा पढ़ने की क्या जरूरत है. रमाकांत बोले-मेरे दोस्त किशन ने बी.एस-सी.एवं एग्रीकल्चर में स्नातक की उपाधि प्राप्त की है. ये सब मजदूर जो विभिन्न औजारों से काम कर रहें हैं, सभी बारहवीं या उससे अधिक पढ़े हुए हैं.बेटा आकाश, हम कोई भी कार्य करें लेकिन पढ़ाई जरूरी है.पढ़ाई हमारे जीवन का अंग है. हम पढ़ लिखकर ही अपने कार्य सुचारू रूप से कर सकते हैं.

किशन पढ़ा लिखा है इसलिए वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग करते हुए खेती का कार्य कर रहा है, जिससे उसे अधिक लाभ प्राप्त होता है.

अब आकाश की समझ में आ गया कि पढ़ाई कितनी जरूरी है. आकाश ने अपने पिताजी से अपने व्यवहार पर क्षमा माँगी. अब वह खेल के अभ्यास के साथ पढ़ाई भी मन लगाकर करता है.

टेकराम ध्रुव 'दिनेश 'द्वारा पूरी की गई कहानी

प्रिया की बातें सुनकर मम्मी सोचने लगीं कि यह इसी तरह स्कूल में बोरियत महसूस करती रही और स्कूल जाने से मना करती रही तो इसकी पढाई पर विपरीत प्रभाव हो सकता है. उसने परीक्षा की तैयारी पूरी कर ली है लेकिन घर पर रहकर वह पढ़ाई भी नहीं करेगी है, इधर-उधर समय बिताएगी. इसके लिए कुछ करना पड़ेगा.

अगले दिन मम्मी ने स्कूल जाकर प्रिया के टीचर से मुलाकात की और उन्हें प्रिया की समस्या के विषय में बताया.टीचर ने कहा-प्रिया तो पढ़ाई में अच्छी है, उसे ज्यादा समझाने की जरूरत ही नहीं पड़ती, इसलिए मैं उन बच्चो पर ज्यादा ध्यान दे रहा हूँ जो पढ़ाई में कमजोर हैं.

मम्मी ने कहा-टीचर जी, आप कमजोर बच्चों की तरफ ध्यान दे रहे हैं वो तो ठीक है लेकिन इसके चलते आपने प्रिया की तरफ से ध्यान हटा लिया है, इसलिए वह स्कूल में बोरियत महसूस करती है और उसका मन स्कूल में नहीं लग रहा है. आप कुछ उपाय सोचिए जिससे उसका मन स्कूल में लगा रहे.

टीचर ने कहा-ठीक कहा आपने, उसे स्कूल भेजिए हम उसकी बोरियत दूर करने का उपाय करेंगे.

अगले दिन प्रिया स्कूल गई.

टीचर ने कहा-आज हम कुछ सवाल हल करेंगे. फिर प्रिया की तरफ देखकर बोले क्या तुम इन सवालों को हल कर सकती हो

प्रिया? प्रिया के हाँ कहने पर टीचर ने कहा-बच्चो! आज प्रिया तुम लोगों को इन सवालों का हल समझाएगी, तब तक मैं दूसरे काम कर लेता हूँ

प्रिया ने अपने साथियों को एक-एक सवाल हल कर समझाए. जो बच्चे टीचर से प्रश्न पूछने से हिचकिचाते थे वे बेझिझक प्रिया से सब कुछ पूछ पा रहे थे. अब प्रिया को बोरियत महसूस नहीं हो रही थी क्योंकि उसकी बोरियत का इलाज हो चुका था.

शालिनीपंकज दुबे द्वारा पूरी की गई कहानी

आकाश की बात सुनकर उसके पापा ने कुछ नही कहा. कुछ दिन इसी तरह बीत गये. आकाश अभी भी क्रिकेट देखता पर अपने पापा का मौन उसे खटकने लगा था, वह सोचने लगा कि पापा मुझे और कुछ क्यों नही कहते! या,,,,या वो डाँट ही देते. इधर आकाश के पापा इस सोच में थे कि कैसे इस समस्या का हल निकाला जाए? आखिरकार उन्हें कुछ सूझा.

आकाश के पापा आज शाम को समय पर घर नही आये. अक्सर वो 5 बजे तक आ जाते थे पर आज 6 फिर 7 बज गये. आकाश परेशान था उसने सोच लिया था कि अपने पिता से माफी माँगेगा और वही करेगा,जिससे उन्हें खुशी मिले. वो बेचैन होकर कभी घड़ी देखता तो कभी अपनी मम्मी से जाकर पूछता.

आखिर 8 बजे उसके पापा आये तो आकाश जाकर उनसे लिपट गया. इससे पहले कि वह कुछ कहता, उसने देखा कि पिताजी क्रिकेट का पूरा समान लेकर आए थे. आकाश ने अपनी मन की बात पिताजी से कही. तब उसके पापा ने उसे समझाया कि ठीक है तुम्हारी जिसमें रुचि है, वही कैरियर बनाना पर शिक्षा सबसे जरूरी है.

आकाश पिताजी की बात समझ गया था.

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गई कहानी

पिता-पुत्र दोनों के तर्क अपनी जगह सही थे. पिता की इच्छा थी कि बेटा पढाई के साथ क्रिकेट में भी अव्वल रहे. आकाश की रुचि केवल क्रिकेट में थी. वह एक क्रिकेटर बनने की इच्छा रखता था. पिता-पुत्र के विचार मेल नहीं खा रहे थे. ऐसे में पिता ने धैर्यपूर्वक अपनी पत्नी से विचार-विमर्श किया और यह तय किया कि हम अपने पुत्र के क्रिकेटर बनने के सपने की राह में रोड़ा बनने की जगह उसकी यथासंभव मदद करें.

अगले दिन से आकाश को क्रिकेट अभ्यास हेतु स्कूल की छुट्टी के बाद शहर के ग्राउंड में पापा रोज शाम को ले जाने लगे. कोच भी मेहनत से सिखाने लगे और आहिस्ता-आहिस्ता आकाश के खेल में सुधार होने लगा. पापा और परिवार के सहयोग से आकाश के विचार भी बदल गये. अब वह खेल के साथ पढाई की ओर भी ध्यान एकाग्र करने लगा.

जिससे उसका परीक्षा परिणाम भी बेहतर आया और खेल में भी पारंगत होता जा रहा था. आकाश में आए सकारात्मक परिवर्तनी को देखकर सभी काफी प्रसन्न हुए.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

पिकनिक

आज श्रेया सुबह-सुबह ही उठ गई और शीघ्रता से तैयार भी हो गई. वह बहुत उत्साहित थी क्योंकि आज बहुत दिनों के बाद पूरे परिवार के साथ पिकनिक पर जाने का कार्यक्रम बना था.मम्मी पापा दादा दादी भैया सभी अपनी-अपनी तैयारियों में लगे थे. श्रेया बहुत उतावली हो रही थी, उसे लग रहा था कि बहुत देर हो रही है.

अंततः प्रातः 9 बजे सभी लोग घर से एक बड़ी सी कार से रवाना हो गये. पिकनिक के लिए तय जगह तक पहुँचने में लगभग एक घण्टे का समय लगने वाला था.

आधे घण्टे की यात्रा के बाद अचानक कार रुक गई. ड्राइवर ने बताया कि कार में कोई गड़बड़ी आ गई है. पापा ने ड्राइवर के साथ खराबी समझने और ठीक करने का प्रयास किया पर सफल नहीं हो सके. श्रेया के मुख पर उदासी छा गई. ड्राइवर आसपास किसी मैकेनिक की खोज में चला गया.अब उन सबके पास प्रतीक्षा करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था.

अब इसके आगे आप अपनी कल्पना से इस कहानी को पूरा कीजिए और हमें माह की 15 तारीख तक ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें. आपके द्वारा पूरी की गई कहानियों में से चुनी गयी श्रेष्ठ कहानी किलोल के अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी.

राख सी हस्ती

रचनाकार-श्रवण कुमार साहू "प्रखर"

आज जिंदगी क्यूँ मौत से,
इतनी सस्ती हो गई.
आबाद शहर की मानों,
राख सी हस्ती हो गई..

जिंदगी इतनी सख़्त,
अब तक कभी न थी प्रखर.
सपनों का घरौंदा एकाएक,
क्यों गया है बिखर..

टूटी हुई पतवार,
फूटी हुई,ज्यों कश्ती हो गई.
साजिश और अविश्वास का,
चहुंओर मंजर हो गया.
कपटी,छद्मवेश सा जीवन,
पीठ पे ख़ंजर गोभ गया..

तपती मरुभूमि सी,
आज हरेक बस्ती हो गई.
अब तो लोग अपनों की मैय्यत में,
जानें से डरने लगे हैं.

खबर छप रही है हरेक घर में,
हर रोज कोई अपने मरने लगे हैं..

लाशों का हिसाब कौन करे,
ये जिंदगी परहस्ती हो गई.
इत्ता तो समझ जा रे मानव,
अब तेरी क्या औकात हो गई.

रूप, रंग, धर्म और भाषा,
अब बता तेरी क्या जात हो गई..
इस मायाबाजार में मानों,
यमदूत की मटरगस्ती हो गई..

आधुनिक काल

रचनाकार-महेंद्र देवांगन "माटी"

आजकल के छोकरे, चला रहे सब नेट.
आये कोई द्वार में, खोले कभी न गेट..

काम-धाम अब छोड़ के, करते रहते चेट.
पढ़े-लिखे सब घूमते, होय मटिया मेट..

पहले खोलो वाट्सअप, देखो सब मैसेज.
कापी-राइट पेस्ट कर, तू भी सब को भेज..

भेजे ना सन्देश जो, कुप्पा उसको जान.
करे कभी ना वाह भी, बोझा उसको मान..

माँ कुछ चमत्कार करो

रचनाकार-प्रिया देवांगन "प्रियू"

मुझ पर थोड़ी दया करो माँ,
कुछ ऐसा उपकार करो.
नये वर्ष में माँ तुम अपना,
चमत्कार साकार करो..

संकट में है सारे मानव,
त्राहि-त्राहि है मचा हुआ.
रोते-रोते दिन है कटते,
मुक्ति धाम है सजा हुआ..

टूट पड़ो माँ काली बनकर,
राक्षस का संहार करो.
नये वर्ष में माँ तुम अपना,
चमत्कार साकार करो..

रोजी-रोटी खातिर मानव,
भटक रहा दुनिया सारी.
ऐसा कलयुग आया साथी,
विपदा टूट पड़ी भारी..

छोटे-छोटे बच्चे हैं माँ,
कुछ ऐसा उपकार करो.
नये वर्ष में माँ तुम अपना,
चमत्कार साकार करो..

आना-जाना बंद सभी का,
घर पर ही सोये रहते.
बच्चे-बूढ़े भूखे बैठे,
मात-पिता खोये रहते..

जो पापी अत्याचारी है,
उस पर तुम तलवार धरो.
नये वर्ष में माँ तुम अपना,
चमत्कार साकार करो..

कुछ खाने को मिल जाये

रचनाकार-मनोज कश्यप

एक दिन व यूँ ही घूमते-घूमते आम के एक बाग़ में पहुँच गया. वहाँ रसीले आमों से लदे कई पेड़ थे. रसीले आम देख उसके मुँह में पानी आ गया और आम तोड़ने वह एक पेड़ पर चढ़ गया. लेकिन जैसे ही वह पेड़ पर चढ़ा, बाग़ का मालिक वहाँ आ पहुँचा.

बाग़ के मालिक को देख आलसी आदमी डर गया और जैसे-तैसे पेड़ से उतरकर वहाँ से भाग खड़ा हुआ. भागते-भागते वह गाँव में बाहर स्थित जंगल में जा पहुँचा. वह बुरी तरह से थक गया था, इसलिए एक पेड़ के नीचे बैठकर सुस्ताने लगा.

तभी उसकी नज़र एक लोमड़ी पर पड़ी. उस लोमड़ी की एक टांग टूटी हुई थी और वह लंगड़ाकर चल रही थी. लोमड़ी को देख आलसी आदमी सोचने लगा कि ऐसी हालत में भी इस जंगली जानवरों से भरे जंगल में ये लोमड़ी बच कैसे गई? इसका अब तक शिकार कैसे नहीं हुआ?

जिज्ञासा में वह एक पेड़ पर चढ़ गया और वहाँ बैठकर देखने लगा कि अब इस लोमड़ी के साथ आगे क्या होगा?

कुछ ही पल बीते थे कि पूरा जंगल शेर की भयंकर दहाड़ से गूंज उठा, जिसे सुनकर सारे जानवर डरकर भागने लगे, लेकिन लोमड़ी अपनी टूटी टांग के साथ भाग नहीं सकती थी. वह वहीं खड़ी रही.

शेर लोमड़ी के पास आने लगा, आलसी आदमी ने सोचा कि अब शेर लोमड़ी को मारकर खा जायेगा. लेकिन आगे जो हुआ, वह कुछ अजीब था. शेर लोमड़ी के पास पहुँचकर खड़ा हो गया. उसके मुँह में मांस का एक टुकड़ा था, जिसे उसने लोमड़ी के सामने गिरा दिया. लोमड़ी इत्मिनान से मांस के उस टुकड़े को खाने लगी. थोड़ी देर बाद शेर वहाँ से चला गया.

यह घटना देख आलसी आदमी सोचने लगा कि भगवान सच में सर्वेसर्वा है. उसने धरती के समस्त प्राणियों के लिए, चाहे वह जानवर हो या इंसान, खाने-पीने का प्रबंध कर रखा है. वह अपने घर लौट आया.

घर आकर वह २-३ दिन तक बिस्तर पर लेटकर प्रतीक्षा करने लगा कि जैसे भगवान ने शेर के द्वारा लोमड़ी के लिए भोजन भिजवाया था. वैसे ही उसके लिए भी कोई न कोई खाने-पीने का सामान ले आएगा.

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ. भूख से उसकी हालात ख़राब होने लगी. आख़िरकार उसे घर से बाहर निकलना ही पड़ा. घर के बाहर उसे एक पेड़ के नीचे बैठे हुए बाबा दिखाए पड़े. वह उनके पास गया और जंगल का सारा वृतांत सुनाते हुए वह बोला, “बाबा जी! भगवान मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं? उनके पास जानवरों के लिए भोजन का प्रबंध है. लेकिन इंसानों के लिए नहीं.”

बाबा जी ने उत्तर दिया, “बेटा! ऐसी बात नहीं है. भगवान के पास सारे प्रबंध है. दूसरों की तरह तुम्हारे लिए भी. लेकिन बात यह है कि वे तुम्हें लोमड़ी नहीं शेर बनाना चाहते हैं.”.

जवारा विसर्जन

रचनाकार-सोमेश देवांगन

कइसे करबो माता जोत जवारा के विसर्जन
सेवा करे हावन नव दिन माता कांप जाथे मन
सेवा बजायेन तोर माता जवारा के करे जतन
कइसे करबो माता जोत जवारा के विसर्जन.....

करशा चुरकी माटी जवा मिला तोला सिरजायेन
सींचेन जवारा ल अउ के घी के जोत जलायेन
नव दिन माता के आघू सेवा जस गीत गायेन
सेवा भाव म लीन रहिके अपन दिन ल पहायेन
कइसे करबो माता जोत जवारा के विसर्जन....

जोत जवारा विसर्जन म आंसू लागे बोहावन
जवारा विसर्जन ला सोच के रोवत हावे मन
बोहावत आंसू मन ले करेन जवारा विसर्जन
सोमेश करत हे माता अपन तन मन धन अर्पन
कइसे करबो माता तोर जोत जवारा के विसर्जन.....

जल्दी आबे माता रद्दा जोहत बइठे हमन
आशिष कृपा रखहु माता खुश रहें लइकामन
बोहावत आँसू ले करबो माता जोत जवारा के विसर्जन

नटखट नन्ही

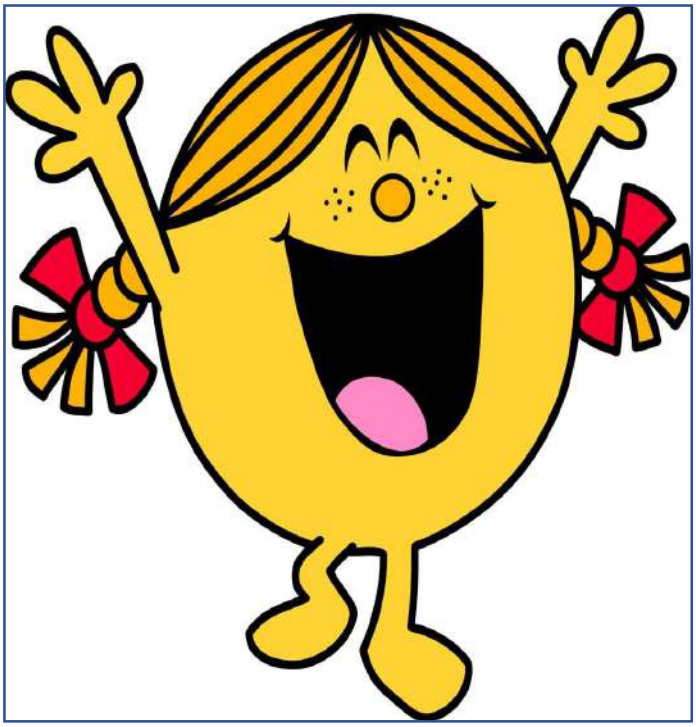

1. नन्ही: पापा, आप जानते हैं कि मैं लोहे से पानी निकाल सकती हूँ?
   पापा: अरे वाह नन्ही! हमें भी बताओ
   नन्ही: बहुत आसान है. हैण्डपंप से!

2. टीचर: तुम तो पढ़ाई में बहुत कमजोर हो. मैं तुम्हारी उम्र में गणित के इससे भी कठिन सवाल हल कर लेता था.
   नन्ही: जरूर आपके टीचर बहुत अच्छे रहे होंगे.

3. नन्ही भगवान से प्रार्थना कर रही थी. भगवान प्लीज पंजाब को अमेरिका की राजधानी बना दो!
   मम्मी ने पूछा: अरे नन्ही, तुम ऐसा क्यों चाहती हो?
   नन्ही: क्योंकि मैं पेपर में ऐसा ही लिखकर आई हूँ.

4. पिताजी: नन्ही तुम्हारा आज का पेपर कैसा गया?
   नन्ही: पहला सवाल छूट गया, तीसरा आता नहीं था, चौथा करना भूल गई, पांचवां कर नहीं पाई!
   पिताजी: और दूसरे सवाल का क्या हुआ?
   नन्ही: सिर्फ वो ही गलत हो गया.

5. नन्ही: माँ, मुझे इतिहास विषय बिल्कुल अच्छा नहीं लगता.
   माँ: पर क्यों नन्ही?
   नन्ही: उसमें ऐसे समय की बातें होती हैं जब मेरा जन्म भी नहीं हुआ था.

कन्या भोज

रचनाकार-प्रिया देवांगन "प्रियू"

छन्न पकैया छन्न पकैया, माता घर घर जाती.
नौ कन्या बनकर माता, खुशियाँ वह बिखराती..

छन्न पकैया छन्न पकैया, बेटी दुर्गा काली.
सदा करो रक्षा तुम मानव, बनकर के तुम माली..

छन्न पकैया छन्न पकैया, मैया दर्शन देती.
नौ दिन तक जो पूजा करते, सारे दुख हर लेती..

छन्न पकैया छन्न पकैया, बेटी सभी बचाओ.
जग को रौशन करती बेटी, धरती पर तुम लाओ..

छन्न पकैया छन्न पकैया, नव दिन जोत जलाओ.
मनोकामना पूरी होगी, कन्या भोज कराओ..

अइसे जीनगी ल पहाना हे

रचनाकार-टेकराम ध्रुव 'दिनेश'

करोना संकट भागे नइ हे
मास्क अभी लगाना हे
मनखे मन के बीच म संगी,
दू गज दूरी बनाना हे.

घेरी-बेरी हाथ धोय के,
वायरस ल हटाना हे.
अइसे करके खुद ल अउ,
दूसरो ल बचाना हे.

मानुष जोनी पाये हन त
जुच्छा नइ गवाना हे.
धीरज,दया अउ धरमके
मन म जोत जगाना हे.

हिरदय पावन राहय सब के
मानवता लाना हे.
जुग-जुग तक सब याद करय,
जिनगी ला अइसन बनाना हे.

बुजुर्ग बरगद की तरह होते हैं

रचनाकार-मनोज कुमार पाटनवार

बुजुर्ग बरगद की तरह होते हैं
सुख दुख में साथ खड़े रहते हैं.
माली बनकर सिंचित करते है
बरगद बनकर पोषित करते है.

बेटो को जीवन का हुनर बताया
पोते को हंसना चलना सिखाया.
उनके रहने से घर की शान है
बुजुर्ग ना रहें तो घर बेजान हैं.

बुजुर्गों से मिलती घर को पहचान हैं
बुजुर्गों से ही मिलता नया-नया ज्ञान है
जिस घर में बुजुर्गों का होता मान हैं
उस घर के बच्चे बनते ज्ञानवान हैं.

यदि चाहते हैं बच्चे बने संस्कारवान
तो बुजुर्गों का करें मन से सम्मान.
बुजुर्गों से ही संस्कृति की आन हैं
बुजुर्गो से ही कहानियों में जान है.

बुजुर्ग अनुभवों और गुणों की खान है
इनके नुस्खों से ही बच्चे बनते महान है.
जिस घर में बुजुर्ग सुख से रहते है
उस घर में देवता रहते है.

बेटे की मुस्कान

रचनाकार-मनोज कुमार पाटनवार

तेरा मुस्कान मुझे लगे अति प्यारा
तुझपे वारूं अपना जीवन सारा
तेरे मुस्कान से मिटता थकान सारा
तू ही तो है मेरा एक सहारा

तेरा मुस्कान मुझे लगे अति प्यारा
तुझसे ही पाऊं जीवन में उजियारा
तेरे मुस्कान से घटता जाता दुख सारा
तू ही तो है मेरे खुशियों की धारा

तेरा मुस्कान मुझे लगे अति प्यारा
हर अदा लगे तेरा मनभावन
किलकारीयों से गूंजता घर-आंगन
तेरा मिट्टी से खेलना लगे सुहावन

तेरा मुस्कान मुझे लगे अति प्यारा
उम्मीद पर मेरी खरा उतरना
लोगों की निश्वार्थ सेवा करना
नेक कर्मों से घर महकाते रहना

मुख पर मुस्कान सबकी
सदा तुम लाते रहना

अना

रचनाकार-आसिया फ़ारूक़ी

सूरज की किरणों ने आँगन में रुपहली चादर बिछा दी थी. शादी की धूम थी. मेहमानों से घर भरा हुआ था. ढोलक की थाप पर गाना चल रहा था-‘‘कजरारे-कजरारे तेरे काले-काले नैना.’’ जहाँ गाने की धुन पर चाची, खाला, फूफी झूम रहीं थीं वहीं नीचे आँगन में ज़ोया, हिना, शिज़ा अन्य बच्चों के साथ गरमागरम जलेबियाँ और समोसों का ज़ायक़ा लेते हुए बातें कर रही थी. हर तरफ ख़ुशी का माहौल था. हिना सारा दिन चहकती-फुदकती रहती. बार-बार कपड़े बदल-बदलकर सबको दिखाती. उसकी बड़ी बहन अना जिसे वह प्यार से बज्जो कहती थी, की शादी थी. अना एक कमरे में चुपचाप बैठा दी गई थी. मासूम चेहरा. दुबली-पतली. मात्र 19 वर्ष की बच्ची. सबको खामोशी से देखा करती. उसे बार बार वह दिन याद आ रहा था जब वह कालेज से घर आयी थी. घर मे कुछ मेहमान थे. यही लोग रिश्ता लेकर उसके घर आये थे. वह कुछ जान समझ नहीं सकी थी कि जिन्हें वह चाय नाश्ता करा रही है वे उसके व्याह की बात तय करने आये हैं.

तभी अना की माँ कमरे में आईं "अना! लो बेटा नाश्ता कर लो." माँ नाश्ता टेबल पर रखकर जैसे ही मुड़ीं अना ने माँ का दुपट्टा पकड़ लिया. माँ ने अना का चेहरा अपनी हथेलियों में ले लिया. अना ने मासूमियत से कहा-"माँ मुझे आगे पढ़ना है.अब मैं कैसे पढ़ूँगीं" ? यह कहते हुए आँसू उसकी आँखों से टप-टप करके माँ की हथेलियों पर गिर पड़े. माँ को बेटी अना के दर्द का एहसास था. माँ ने कहा-"अना, तू खुश रहना और जिन्दगी में कभी कमज़ोर मत पड़ना. तेरी माँ तेरे साथ है बेटा."

अना की आँखों में हज़ारों सवाल घूम रहे थे पर वह चुप थी.

अगले दिन अना बिदा होकर अपने ससुराल आ गई. अपनी किताबें जिन्हें वो कभी अपने से अलग न करती थी, साथ लेकर आयी. अना के घर से यहाँ का माहौल बिल्कुल अलग था. जहाँ उसके मायके में चार लोगों का छोटा सा परिवार था, उसके उलट ससुराल में दस-बारह लोगों का भरा-पूरा परिवार था. अब अना घर का काम करती. आने-जाने वाले मेहमानो से बातचीत, चाय-नाश्ता साफ़-सफ़ाई, देख-रेख करते करते दिन भर में थक जाती. अना अपनी पढ़ाई को लेकर काफी परेशान होने लगी. वो अन्दर ही अन्दर घुटी जा रही थी.

एक दिन उसकी सास ने कहा कि "पढ़कर क्या करोगी, घर के काम ही तो करने है." अब अना उदास रहने लगी. मन उदास होने की वजह से खाना कम लज़ीज़ बना पाती लेकिन जब सबके सामने दस्तरख़्वान पर से सासू माँ खाने को बेस्वाद बताकर उठ गई तो मानो अना के अन्दर कुछ टूट गया. अना अपनी डायरी निकालकर माँ से पूछ-पूछकर सारी रेसिपी लिख लेती और डायरी से पढ़-पढ़कर हर दिन अलग-अलग ज़ायकेदार खाना तैयार करती. अना को पढ़ाई का अपना ख्वाब पूरा करना था. वह उसे कभी भूली नहीं.

अना की उदासी उस वक़्त कुछ कम हुई जब उसके माँ-पापा उसके लिए आगे की पढ़ाई की किताबें और कॉलेज के एडमिशन का फ़ार्म लेकर आये. अना किताबें देखकर खुश तो बहुत हुई पर अगले ही पल बोली, "माँ ! मुझे पढ़ने का समय कैसे मिलेगा?" माँ ने अना की हिम्मत बढ़ाई, पापा ने भी खूब समझाया. उनके जाने के बाद से अना ने दिन-रात एक कर दिया. अना छत पर एक कोने में चटाई बिछाकर बैठ जाती और खुद को किताबों में गुम कर लेती. इसी तरह पूरी मई-जून की गर्मियों में, जब सब पंखे-कूलर की हवा में सोते, अना किसी कोने में किताबों में खोयी होती. घर के काम खत्म करके वह अपनी किताबें लेकर बैठ जाती. वह एक पल भी व्यर्थ नहीं करना चाहती थी. क्योंकि वह कुछ अलग करने की ठान चुकी थी. धीरे-धीरे एक साल बीत गया अब अना एक प्यारी सी बच्ची की माँ की भी ज़िम्मेदारी सम्भाल रही थी. अब उसे दिन में तो पढ़ाई का वक़्त नहीं मिलता. सारा दिन घर, रसोई और बच्ची के कामो में लगी रहती. अना बच्ची को नहला-धुलाकर दाई के पास छोड़कर कॉलेज जाती और रात में सब के सो जाने के बाद किचन की लाइट जलाकर ज़मीन पर बैठकर अपने नोट्स तैयार करती थी. कभी-कभी तो सारी रात वो लिखती रहती और सुबह की अज़ान के वक़्त जब उसकी नन्हीं परी उठकर भूख से रोती तो अना झट से दौड़कर उसे उठा लेती और उसके कामों में लग जाती. अना वक़्त की पाबन्द और दूसरों की परवाह करने वाली लड़की थी. वह हँसमुख और शिष्ट थी. वह सारी मुश्किलों को नज़र अन्दाज़ कर अपनी पढ़ाई करती.

अना एक दिन जब कालेज से घर आई तो देखा कि उसके कुछ नोट्स नहीं मिल रहे थे. पता चला कि कबाड़ के साथ जला दिये गये हैं. वो समझ रही थी कि यह सब जानबूझ कर किया

गया है. अना छट-पटाकर रोने लगी. उसके दिल में छाए बादल आंखों से बहने लगे. फोन पर माँ के काफी समझाने के बाद उसने खुद को संभाला. फिर से तैयारी में जुट गयी. अब कमरे के हर दरवाज़े और किचन के पल्ले पर अना के नोट्स और चार्ट चिपके होते. अना भोजन बनाते, बच्ची का काम करते, साफ़-सफाई करतेे अपने नोट्स देखती जाती. इसी तरह तैयारी करके उसने कालेज में प्रथम स्थान पाकर सबको दिखा दिया कि सफलता इत्तेफ़ाक नहीं बल्कि मेहनत का नतीजा है.

जल्द ही वो दिन भी आ गया जब अना के हाथ में सरकारी नौकरी का फरमान था. जो उसके ससुराल में आज तक किसी बहू को न मिला था. अना की ये कामयाबी उसकी माँ को समर्पित जिसने उसे मज़बूत बनाया. यूँ ही नहीं मिलता कोई मुक़ाम उन्हें पाने के लिये चलना पड़ता है, इतना आसान नहीं होता कामयाबी मिलना,उसके लिये किस्मत से लड़ना पड़ता है."

आज अना हज़ारों बच्चों की मुस्कान है. वो आग में तपकर कुंदन बन चुकी है और एक मज़बूत चट्टान की तरह समाज के सामने खड़ी है. असहाय औरतों और बच्चे-बच्चियों की तरक़्क़ी के लिए काम कर रही है. सरकारी महकमे में भी अपनी अलग पहचान बना चुकी है. अना का संघर्ष जीवन के फलक पर सितारों की भांति दमक रहा है जैसे कोई मुरझाया फूल ओस की नमी पाकर खिले उठा हो.

अमर बलिदान

रचनाकार- अविनाश तिवारी

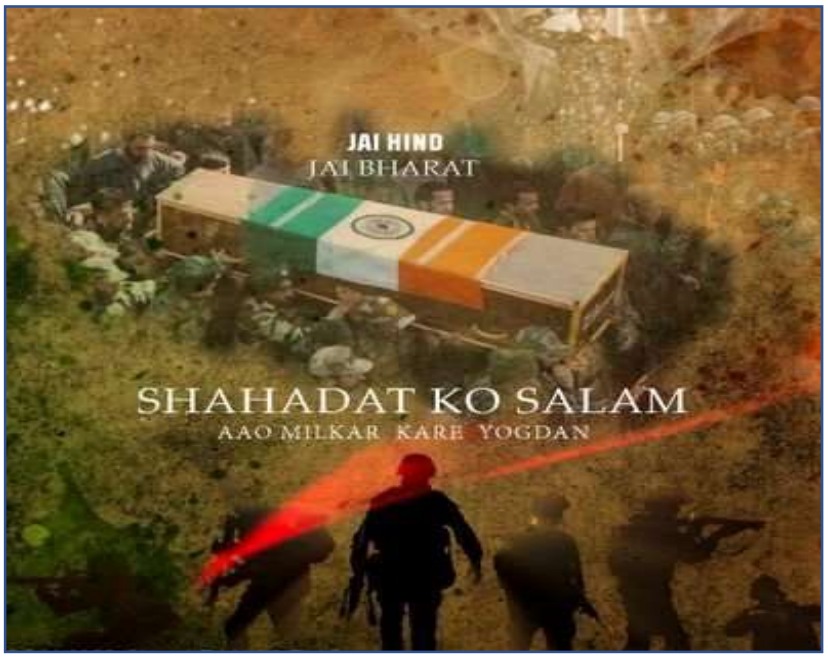

गर्व हो अभिमान हो,
छत्तीसगढ़ के लाल हो.
इस माटी का कर्ज चुकाया,
दे बलिदान फ़र्ज़ निभाया.

तेरी यशगान गा रहा तिरंगा,
चेहरे में रंग लाल गुलाल है.
नतमस्तक तेरी शहादत पर
ऊंचा भारत का भाल है.

गर्वित है वह कोख जिसका
मान बढ़ाया है.
चौड़ी है पिता की छाती
अन्तस् में जिसके तू समाया है.

नमन वंदन अश्रुदल समर्पण,
दिल आज भर आया है.
ईश्वर के घर,
धरती से फरिश्ता आया है.

लहुटत हे कोरोना

रचनाकार-सोमेश देवांगन

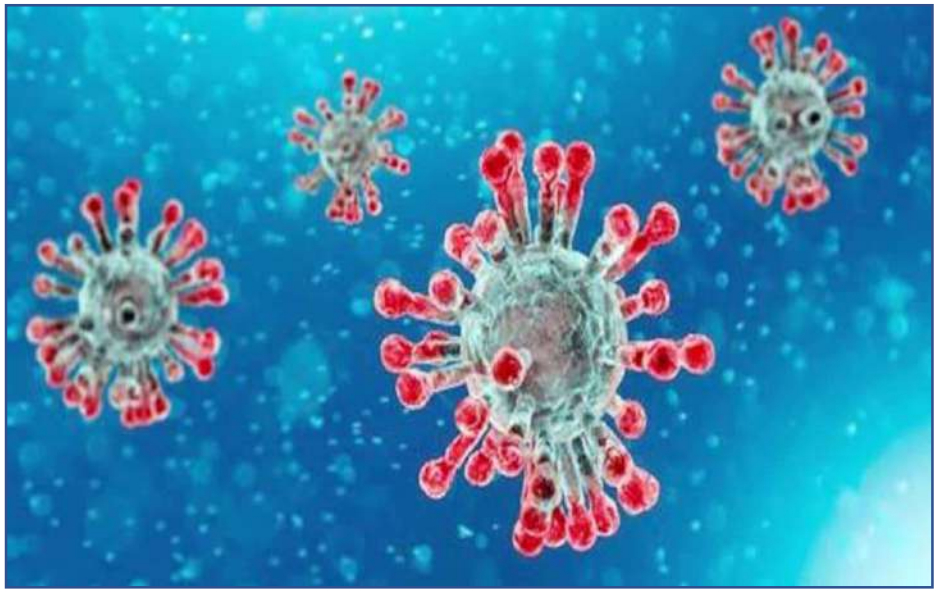

लहुटत हावय मास्क लहुटत हे कोरोना.
करेन अपन मनमानी अब रोबो अपन रोना..

फेर लगाव मास्क ल अउ लगाव सेनेटाइजर.
कोरोना बाढ़त हे जइसे लगे स्टेपलाइजर..

गांव म हाका हे कोरोना हावय जिंदा..
काबर कोनो नई करत हो जिनगी के चिंता..

वायरस सन करत हन हमन मनमानी.
धरही कोरोना लागय नही बुढ़वा अउ जवानी..

घेरी-बेरी सेनेटाइजर अउ मास्क ल लगाव.
ये कोरोना बीमारी ल अपन ले दुरिहा भगाव..

भलाई

रचनाकार-अयन तिवारी, कक्षा पांचवी, शा. प्रा. विद्यालय बेलगहना, बिलासपुर

मनोहर की दोनों ऑखें खराब हो गई थीं. पहले एक,फिर दूसरी. उसकी पत्नी और बेटी ने उसे छोड़ दिया था. मनोहर अकेला रहता था. तब उसका एक पुराना दोस्त आकर उसके साथ रहने लगा. दोस्त का व्यवहार बड़ा अजीब था. मनोहर पानी माँगता तो उसका दोस्त एक बार तो पानी पिला देता पर दूसरी बार माँगने पर कह देता कि तुम खुद ले सकते हो, उठो अपने आप लेकर पी लो. वह कपड़े माँगता तो एक बार देता दूसरी बार कह देता अलमारी में रखे हैं जाओ अपने आप ले लो. कभी मनोहर का मन घूमने का होता तो वह एक बार घुमा देता और जब दूसरी बार की बात आती तो कह देता मुझे काम है तुम अकेले ही घूम आओ. मनोहर मन मसोसकर जैसे-तैसे अपना काम करता.

असल बात यह थी कि मनोहर का दोस्त उससे कम प्यार नहीं करता था, न काम से बचना चाहता था बल्कि वह बार-बार दया दिखा कर मनोहर को सदा के लिए आश्रित नहीं बनाना चाहता था. वह उसमें आत्मविश्वास पैदा कर देना चाहता था.

धीरे-धीरे मनोहर अपने काम स्वयं करने लगा. अब उसे किसी के सहारे की जरूरत नहीं रही. तब उसने समझा कि उसके दोस्त ने उसका कितना भला किया. मनोहर नेत्रहीनों की एक संस्था में चला गया और वहाँ उसने कई असहाय भाई बहनों को अपने पैरों पर खड़ा होने में सहायता की.

फोटु खिंचईया के गोठ

रचनाकार-सोमेश देवांगन

मय हरव सबके फोटू खिंचईया.
तुंहर सुख दुख ल संजो के रखईया..
सब मोला कहय फोटू वाले भईया.
होय कोनो घर के दाई दीदी मईया..

मोर बूता मय रोवत ल घलो हसाव.
कहव हँस के बने फोटू ल खिंचवाव..
रिसाय मनखे ल घलो मय हर मनाव.
जिहा कहेव उहाँ फोटू खिंचेल आव..

का बर का बिहाव सबो जगह जांव.
जनम धरे लइका के छट्ठी में आंव..
मरनी हरनी में तको फोटू खिंचेल जांव.
मोर बूता इही हरय फोटू खिंचे ल आंव..

दुख में रइके तुंहर सुख म घलो जांव.
बोहावत आंसू ल पोछ के मय मुस्कुराव..
अपन सुख ल छोड़ दुख म तुंहर मिल जांव.
अपन हिरदय ल बोल के मय बढ़ समझांव..

का बिहनिया मंझनिया अउ बरसात.
जेन बेरा में कहे त उही बेरा म तुंहर साथ..
भगवान तो मोर केमरा हरय नवाव मय माथ.
दिन भर मोर साथ चलय पकड़े रथे मोर हाँथ..

अपन सब ल छोड़ के मय तुंहर संग जाथव.
तुंहर सपना ल सँजो के मय हर सुख पाथव..
कविता ल मोर सोमू भाई बर समर्पित करथव.
कभू कभू परब परे म संग म ओखर रेंगथव..

भाई बहन

रचनाकार-श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

अपने सब कामों से हैं सबको रिझाते.
भाई बहन प्यार के हैं गीत गुनगुनाते..

साथ-साथ रहते हैं, साथ-साथ खाते.
साथ-साथ लड़ते झगड़ते खिलखिलाते.
खेलते हैं साथ-साथ, साथ-साथ पढ़ते-
नाचते हैं कूदते, साथ-साथ गाते.
भाई-बहन प्यार के हैं गीत गुनगुनाते..

छोटा है भाई बहन थोड़ी बड़ी है.
भाई के लिये बहन तत्पर खड़ी है.
छोटा है भाई किन्तु खोटा बहुत है-
बहन स्नेह की एक मधुर फुलझड़ी है.
आपस में रूठते हैं और मान जाते.
भाई बहन प्यार के हैं गीत गुनगुनाते..

बाहर का कोई यदि आँख भी दिखाये.
दोनों के हमले से तुरंत मात खाये.
घूमते टहलते हैं काम खूब करते-
काम सभी अच्छे हैं कोई कह न पाये.
दीनों के, दुखियों के, काम सदा आते.
भाई बहन प्यार के हैं गीत गुनगुनाते..

कोरोना और बचाव

रचनाकार-पुष्पलता साहू सहायक

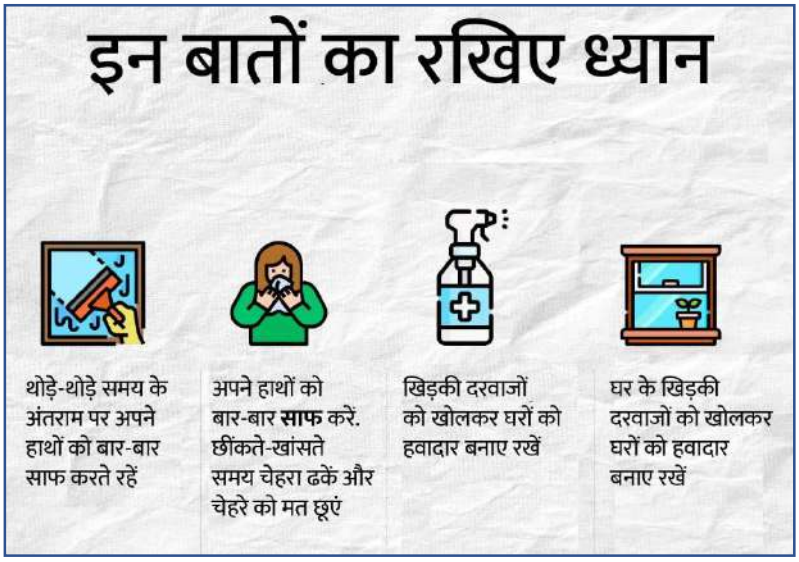

छाई हुई है पूरी दुनिया में,
आज कोरोना का कहर.
कांप रहा है जर्रा जर्रा,
हर एक गांव और शहर.

कैसे फैलता है यह,
आओ इसे हम जानें.
जनहित में जारी,
हर निर्देशों को मानें.

मिलना जुलना छोड़ अब,
समय बिताएं घर पर.
घबराए नहीं इससे,

छाया हुआ है पूरी दुनिया में,
आज कोरोना का कहर.
कांप रहा है जर्रा जर्रा,
हर एक गांव और शहर.

कैसे फैलता है यह,
आओ इसे हम जानें.
जनहित में जारी,
हर निर्देशों को मानें.

मिलना जुलना छोड़ अब,
समय बिताए घर पर.
घबराए नहीं इससे,
सामना करे डट कर.

दो गज की रखें दूरी,
रखे संयमित खान पान.
अब सोशल डिस्टेंस ही,
इसका है समाधान.

मास्क लगाए रहे सुरक्षित,
हाथ धोये बार-बार.
देश की सुरक्षा में आप भी,
हो जाए भागीदार.

छत्तीसगढ़ी वर्ण

रचनाकार-अनिता चंद्राकर

छत्तीसगढ़ी के स्वर

अ-अ से अथान अम्मट, नुनचुर.
आ-आ से आमा हरियर, पिंवर.
इ-इ से इड़हर अब्बड़ सुहाथे.
ई-ई से ईंटा जोरे म बड़ मजा आथे.
उ-उ से उरिद दार के बरा बनाबो.
ऊ-ऊ से ऊँटवा ल पत्ता खवाबो.
ए-ए से एक्का गाड़ी म घुमय ल जाबो.
ऐ-ऐ से ऐंठी पहिन के सबला देखाबो.
ओ-ओ से ओंगन तेल ल चक्का म लगाबो.
औ-औ से औघड़ बबा ले दूरिहा रहिबो.

छत्तीसगढ़ी के व्यंजन

क-क से करसी के पानी पीबो.
ख-ख से खटिया म बबा संग सुतबो.
ग-ग से गरुआ के सेवा करबो.
घ-घ से घर ल गोबर म लिपबो.
च-च से चउक सुग्घर पूरबो.
छ-छ से छत्ता म मदुरस भराही.
ज-ज से जँवारा हरियर हरियर.
झ-झ से झँउहा लाहुँ तोर बर.
ट-ट से टठिया म बासी खाबो.
ठ-ठ से ठगुवा से बाँच के रहिबो.
ड-ड से डबरा के पानी म खेलबो.
ढ-ढ से ढँकना म साग ल ढाँकबो.
त-त से तरिया म कुदके नहाबो.
थ-थ से थरहा दे बर जाबो.
द-द से दरमी लाली लाली खाबो.
ध-ध से धनिया के महकत बारी.
न-न से नरवा हमर चिन्हारी.
प-प से परेवा हमर संगवारी.
फ-फ से फरा चलव बनाबो.
ब-ब से बर म झुलना झुलबो.
भ-भ से भलुआ जंगल म रहिथे.
म-म से मछरी तउरत रहिथे.
य-य से यदुवंशी मन नाचत हे.
र-र से रमकेलिया काबर लजावत हे.
ल-ल से लइका मन पढ़य बर जाहि.
व-व से वकालत के गियान पाहि.
स-स से सरई जंगल के मान बढ़ाथे.
ह-ह से हरदी ह अब्बड़ ममहाथे.

भाग्य

रचनाकार-महेंद्र देवांगन "माटी"

भाग्य भरोसे क्यों बैठे हो, काम करो कुछ नेक.
कर्म करो अच्छा तो प्यारे, बदले किस्मत लेख..

जो बैठे रहते हैं चुपके, उसके काम न होत.
पीछे फिर पछताते हैं वे, माथ पकड़ कर रोत..

जो करते संघर्ष यहाँ पर, उसके बनते काम.
रुख हवाओं के जो मोड़े, होता उसका नाम..

कर्म करोगे फल पाओगे, ये गीता का ज्ञान.
मत कोसो किस्मत को प्यारे, कहते सब विद्वान..

"माटी" बोले हाथ जोड़कर, करो नहीं आघात.
सबको अपना साथी समझो, मानो मेरी बात..

होली में गोली

रचनाकार-सोमेश देवांगन

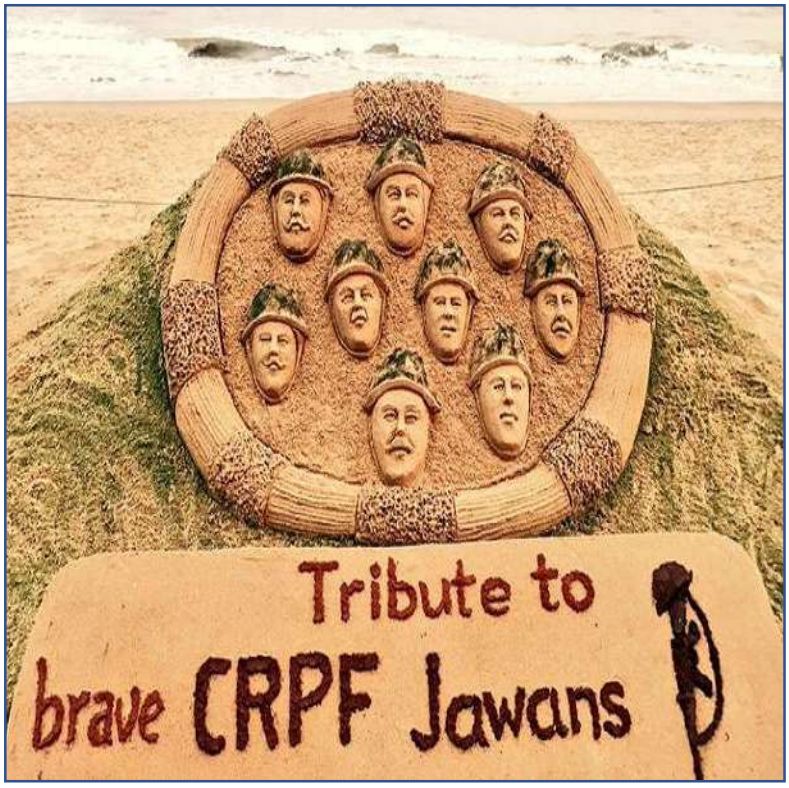

माँ कह रही इस होली आ रहा मेरा लाल.
बच्चों के लिए पिचकारी हाथ धरे गुलाल..

बम धमाके चल रहे पिचकारी वाली गोली.
खेल रहे है दुश्मन आज भी खून की होली..

उड़ा दी बस बम लगा के कायरता दिखाई.
कायर दुश्मन ये कैसी पीठ पीछे की लड़ाई..

दम होता तो करते वार चलाते सीने में गोली.
एक अकेला सौ मार गिराता दुश्मन की टोली..

कब तक चढ़ाए दुश्मन के हाथो अपनो की बली.
बैठे माँ बाप आस लगा बैठी पत्नी लिए नन्ही कली.

देखो फिर खो दिया हमने अपने वीर लालो को.
जागो और मारो थप्पड़ दुश्मन के गालो को.

सब ने दी श्रधांजलि और पुष्प गुच्छ किये भेट.
मुख भी देख न पाए कहे माँ जी हो गया लेट..

पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ.कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

(1)

कभी हरा हूँ, कभी हूँ लाल,
मिल सब्जी में स्वाद बढ़ाऊँ.
खट्टा हूँ पर नही करौंदा,
झट से बोलो क्या कहलाऊँ.

(2)

कभी हरी हूँ, कभी हूँ लाल,
मैं सब्जी का स्वाद बढ़ाती.
खाने पर मैं करूँ कमाल,
बोलो बच्चों क्या कहलाती.

(3)

कभी हरा तो कभी हूँ पीला,
लोग कहें सब मुझे रसीला.
प्यारे बच्चो, नाम बताओ,
नाम बता कर टॉफी पाओ.

(4)

हरे रंग की काया मेरी
मुँह है मेरा लाल,
तीखी मिर्ची मुझको भाती
बतलाओ तत्काल.

(5)

काले रंग का ऐसा पक्षी,
एक आंख से देखे.
पंछी चतुर सयाना है वो
करता काम अनोखे.

(6)

बोली मेरी बहुत सुरीली
बागों की मैं रानी
सभी जगह मैं आदर पाती
बोलूं मीठी वानी.

(7)

सभी पक्षियों का मैं राजा,
काया मेरी सुंदर.
केवल मोती चुगता हूँ मैं,
मान सरोवर घर.

उत्तर

(1) टमाटर

(2) मिर्ची

(3) नींबू

(4) तोता

(5) कौआ

(6) कोयल

(7) हंस

महतारी के अछरा

रचनाकार-सोमेश देवांगन

जिंस टॉप पहिने हे लइका के महतारी.
फेसन के में जिंस कुर्ता हे जारी..

महतारी के अछरा बर ह लुलवावत हे.
अपन गोरस छोड़ डब्बा के दूध पियात हे..

लुगरा के अछरा म लइका ल तोपे कइसे.
दुनिया के बैरी नजर अब बचाही कइसे..

मया दुलार ल लइका ऊपर कइसे लुटाय.
महतारी के तो मोबइल म दिन ह पहाय..

महतारी तो अब मय मॉर्डन हरव कहय.
लइका ह महतारी के मया पाय बर सुसवाय..

पढ़ लिख के सभ्यता ल भुलाएन.
बढ़ भागी वो लइका जेन अछरा ल पाएन..

गाँव गवई के लइका मन बढ़ भागी हवय.
सूबे शाम महतारी के अछरा तरी म रहय..

मजदूर और मेहनत

रचनाकार-सुरेखा नवरत्न

मैं मजदूर हूँ मेहनत करता हूँ,
अपने मेहनत के दम पर अपना पेट भरता हूँ,
लोग भले ही समझते हैं मुझे दीन-हीन,
मैं ही तो मेहनत से उनकी किस्मत बदलता हूँ..
मैं मजदूर हूँ मेहनत करता हूँ.....

सूरज के जागने से पहले, जाग जाता हूँ,
सूरज के सो जाने के बाद, घर लौटता हूँ.
मैं गारे बनाता हूँ, ईंटें चुनता हूँ,
हाँ मैं वही मजदूर हूँ,
जो तुम्हारे सपनों का महल बुनता हूँ.
मैं मजदूर हूँ मेहनत करता हूँ.....

खुद बड़ी-बड़ी इमारतें बनाता हूँ लेकिन मैं,
गंदी बस्ती की झोपड़पट्टी में रहता हूँ.
नहीं मेरे पास मुलायम मखमली बिस्तर,
पत्थर पर सिर रखकर जमीन में सो जाता हूँ.
मैं मजदूर हूँ मेहनत करता हूँ.....

कई दफ़ा मैं रेल की पटरियों से कट जाता हूँ,
कोयले की चाप से, खदानों में भी दब जाता हूँ.
मेरी आवाज कोई नहीं सुनता,
फिर भी मैं कारखानों में काम करता हूँ.
भूखा हूँ, दो वक्त की रोटी कमाने के लिए
जी तोड़ मेहनत करता हूँ.
मैं मजदूर हूँ मेहनत करता हूँ.....

थोड़ा सा काम बिगड़ जाने पर,
मालिक डांट लगाता है.
मेरी हजार रुपए की सैलरी से,
सौ रूपए कट जाता है.
फिर भी मैं दिल पर तकलीफ़ और,
होठों पर मुस्कान लिए लौट आता हूँ.
मैं मजदूर हूँ मेहनत करता हूँ.....

चंद पैसे कमाने परदेश आया हूँ,
घर में बूढ़ी माँ और बच्चों को बेसहारा
छोड़ आया हूं.
कभी-कभी उनकी चिंता सताती है,
इसलिए थोड़े से पैसे डांक पर भेज आया हूँ.
मैं मजदूर हूँ मेहनत करता हूँ.....

कहती कोयल

रचनाकार-डॉ. सतीश चन्द्र भगत

चढ़ी धूप है
कड़ी धूप है
कैसे गाऊँ गाना.

पेड़ कटे हैं
छाँव नहीं है
कैसे पाऊँ खाना.

हवा नहीं है
बेचैनी है
कैसे गाऊँ गाना.

कहती कोयल
पेड़ लगाओ
तब गाऊँ मैं गाना.

बादल लाओ
पानी लाओ
सब खुश हो जाना.

तब गाऊँ मैं
कूं कूं स्वर में
मिसरी जैसी गाना.

खेल खेल में

रचनाकार-अर्चना त्यागी

सोनू और गोलू के पिता उन दोनों के बीच अनबन से बहुत दुखी थे. गोलू, सोनू से दस साल छोटा था. माता पिता का उस पर स्नेह थोड़ा अधिक था. सोनू को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं थी.

वह कहता," जबसे गोलू घर में आया है तबसे सब बदल गए हैं. मेरी ओर किसी का ध्यान ही नहीं जाता है. सब गोलू के आस पास ही घूमते रहते हैं. उसको ही छेड़ते रहते हैं. उसी से हंसते बोलते रहते हैं. खाने पीने की सब चीजें उसकी पसंद की ही आती हैं. कपड़े भी उसके लिए ही पहले आते हैं.

"मम्मी पापा उसे समझाते लेकिन वह कहता," मुझे बड़ा और समझदार कहकर चुप करा देते हैं. गोलू के लाड लड़ाते रहते हैं.

"इसी सोच के चलते गोलू से उसकी नफरत बढ़ती जा रही थी. सोनू का ध्यान बस इसी बात पर रहता कि गोलू कोई ग़लती करे और सोनू मम्मी पापा से उसकी शिकायत करे. गोलू को कभी डांट पड़ जाती तो सोनू खुश हो जाता.

सोनू के मम्मी पापा उसे समझाने की पूरी कोशिश करते," बेटा, गोलू घर में सबसे छोटा है इसलिए सबको उससे लगाव अधिक है. ऐसा बिल्कुल नहीं है कि तुम से किसी को प्यार नहीं

है. तुम गोलू से दस साल बड़े हो इसलिए सभी लोग तुम्हे समझदार मानते हैं" लेकिन सोनू के मन में जो बात बैठ गई तो बैठ गई.

रोज़ शाम के समय सोनू पार्क में खेलने जाता था. एक दिन खेलने गया तो रोते चिल्लाते हुए वापिस आया. उसके बाएं हाथ में चोट लगी थी. उसका दोस्त बंटी उसे घर तक छोड़ने आया था.

पापा ऑफिस से आए तो तुरंत ही सोनू को डॉक्टर के पास ले गए. डॉक्टर ने जांच करके बताया," हाथ की हड्डी टूट गई है.

प्लास्टर लगाना पड़ेगा." सोनू यह सोचकर दुखी था कि वह अपने काम ठीक से नहीं कर पाएगा परन्तु अंदर ही अंदर वह खुश था.

जबसे उसे चोट लगी थी सबका ध्यान उसकी ओर ही था. मम्मी पापा सब भूलकर उसकी सेवा में लगे थे. और तो और गोलू भी उसके पास से नहीं जा रहा था. सोनू को जब प्लास्टर लगा तो गोलू बहुत रोया. उसे डर था कहीं भाई का हाथ ऐसा ही ना रह जाए. गोलू दौड़-दौड़ कर सोनू के सब काम कर रहा था. सोनू मन ही मन सोच रहा था," रोज़ इसके काम मुझे करने पड़ते थे आज इसकी बारी आ गई है. अच्छा ही हुआ.

" गोलू ने जिद करके अपनी छोटी सी चारपाई सोनू के पास ही बिछवाई.

"भैया को रात में भी कोई काम होगा तो परेशानी नहीं होगी." रोज़ सुबह सोनू से पूछता," भैया आपने देखा? कितना हाथ ठीक हो गया है?" सोनू को हंसी आ जाती.

मम्मी उसे समझाती "एक महीने बाद ही अब हाथ का पता लगेगा." दूसरी ओर सोनू एकदम संतुष्ट था.

वह जैसा चाहता था वैसा ही हो रहा था. पंद्रह दिन बीत गए. अब उल्टी गिनती शुरू हो गई थी. गोलू हर रोज़ कैलेंडर से एक तारीख काट देता. पापा मम्मी भी दिन में एक बार तो तारीख देख ही लेते कि किस तारीख को सोनू का प्लास्टर खुलना है?

अब सोनू की मनोदशा बदल रही थी. वह सोचने लगा था," अगर हाथ नहीं टूटता तो मम्मी पापा की परेशानी नहीं बढ़ती.

" मम्मी घर के सारे काम करने के साथ-साथ उसके काम भी करती. जान पहचान वाले हाल-चाल पूछने आते रहते थे. उनको भी समय देती. पहले जो छोटे मोटे काम सोनू कर देता था

वो भी उन्हें ही करने पड़ते थे. पापा दिन भर अपने ऑफिस में रहते और रात में जागते हुए ही सोते थे. गोलू अब सोनू के सारे छोटे-छोटे काम कर देता था.

सोनू को अब अपनी सोच पर पछतावा होने लगा था. मैं, सबके बारे में कितना ग़लत सोचता था. जल्दी से प्लास्टर हटे तो सबकी परेशानी खत्म हो.

" उसके हाथ का प्लास्टर कटने का दिन भी आ गया. जैसे ही प्लास्टर हटा, गोलू खुशी से चिल्लाया.," भैया का हाथ ठीक हो गया.

" वह डॉक्टर की सलाह को बहुत ध्यान से सुन रहा था. घर वापस आया तो पापा ने दोनों भाइयों को अपनी गोद में बिठा लिया. दोनों को बाहों में भरकर बोले," मेरे दोनों हाथ. रहेंगे साथ-साथ." सोनू पापा की बात समझ गया.

उसने गोलू को गले से लगा लिया और मम्मी-पापा से अपने व्यवहार के लिए माफी मांगी. गोलू धीरे से उसका हाथ छूकर देख रहा था.

सोनू की आंखें भर आई," गोलू मेरे भाई मुझे समझ क्यूं नहीं आया कि तू मुझे इतना प्यार करता है. हाथ टूटने पर मुझे समझ आया." गोलू दौड़कर गया और उसका बैट उठा लाया.

"चलो भैया खेलते हैं." सोनू भागकर बॉल उठा लाया और खेल शुरू हो गया.

मास्क वाली होली

रचनाकार-सोमेश देवांगन

मास्क पहन के खलेंगे हम सब होली.
बुरा न मानो कोरोना वायरस की बोली..

पिचकारी की जगह, सेनेटाइजर चलाएंगे.
सूखे रंग गुलालो से होली हम सब मनाएंगे..

दोस्त-यारों से इस होली मिल नही पायंगे.
मिल जाये धोखे से तो गले नही लगाएंगे..

फीका-फीका रहेगा होली का आयोजन.
नही खा सकेंगे दोस्त घर जा के भोजन..

त्योहार पर कोरोना वायरस भारी रहेगा.
मास्क सेनेटाइजर से खेल भी जारी रहेगा.

आग के गोले

रचनाकार-डॉ. सतीश चन्द्र भगत

बैसाख-जेठ है भैया
सूखे सब ताल-तलैया
सूरज दादा गुस्से में
कैसे निकलूँ हा दैया.

फेकते आग के गोले
सूरज दादा धमकाते
डर के मारे कोटर में
बेबस है सोनचिरैया.

मक्खियाँ बहुत इतराये
मच्छर तो बीन बजाये
बछड़ा का मन घबराये
हाँफ रही घर में गैया.

रहम करो बस दादा जी
करते हैं हम वादा जी
यह धूप नरम कुछ कर दो
हम हाथ जोड़ते भैया.

अवसर

रचनाकार-कन्याकुमारी पटेल

सीमा और निधि दसवीं कक्षा में पढ़ती थीं. दोनों अच्छी मित्र और होशियार थीं. अंतर सिर्फ व्यक्तित्व का था, सीमा चंचल, हाजिर जवाब व तुरंत निर्णय लेने में सक्षम थी. वहीं, निधि अपने विचारों में और लोग क्या कहेंगे इस सोच में उलझ कर रह जाती थी. इसी कारण वह कई बार अच्छा मौका हाथ से गंवा देती थी. निधि की शिक्षिका और सीमा अक्सर उसे समझाती कि सही अवसर को नहीं छोड़ना चाहिए. निधि हामी तो भरती पर फिर भूल जाती.

एक बार कक्षा से एक छात्रा को नृत्य एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में जिला स्तर पर प्रदर्शन करना था. सीमा और निधि दोनों ही इस काम में माहिर थी, किंतु निधि ने कभी ऐसी प्रतियोगिता में हिस्सा नहीं लिया था, सीमा ही हमेशा आगे रहती थी.

इस बार सीमा कुछ कारणवश अपने गाँव चली गई थी. शिक्षकों ने निधि को प्रतियोगिता में ले जाने के लिए सोचा, लेकिन निधि फिर सोचने लगी कि लोग क्या कहेंगे और परिवार वाले नहीं जाने देंगे. शिक्षिका ने निधि से कहा कि लोगों की चिंता छोड़ दो निधि और तुम्हारे परिवार से मैं बात कर लूँगी. मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी, यह सुनकर निधि ने बड़ी मुश्किल से हाँ कहा. अगले दिन जब प्रतियोगिता हुई तो निधि पहले घबरा गई. फिर उसने अपनी शिक्षिका की ओर देखा और उसका हौसला बढ़ने लगा. प्रतियोगिता का परिणाम आया तो निधि नृत्य व सामान्य ज्ञान दोनों में प्रथम थी. वह कलेक्टर के हाथों सम्मानित भी हुई. आज निधि बहुत खुश थी और भविष्य में आने वाले किसी भी अवसर को न खोने का संकल्प कर चुकी थी.

वीर जवान

रचनाकार- प्रिय देवांगन प्रियु

रक्षा खातिर देश के, छोड़े घर अरु द्वार.
जान हथेली पर रखे, बिछड़ गए परिवार..

बहती आँखे नीर है, बिछड़े बेटा आज.
खून पसीना एक कर, रखते माँ की लाज..

चलते हैं अंगार पर, ले बन्दूकें हाथ.
है भारत के शेर ये, नहीं झुकाते माथ..

गर्मी सर्दी ठंड हो, चाहे हो बरसात.
रहते सीमा पर खड़े, कैसी हो हालात..

भारत माँ के वीर जब, चलते सीना तान.
आतंकी को मारते, मिले उसे सम्मान..

माँ

रचनाकार-अनिता चन्द्राकर

माँ ममता की मूरत होती, माँ होती भगवान.
माँ का स्थान अद्‌वितीय, माँ गुणों की खान.

माँ शब्द में संसार बसा है, माँ से बढ़कर कौन.
अद्‌भुत धैर्य वसुधा सा उनमें, सहती रहती मौन.

माँ धूप में शीतल छाया, स्नेह भरी पुरवाई माँ.
सर्द भोर में गुनगुनी धूप, हर रोग की दवाई माँ.

गंगाजल सी पावन होती, माँ पूजा की थाली.
गोद लगे सुखद बिछौना, माँ की बात निराली.

माँ नाम समर्पण का, वात्सल्य की निर्मल धारा.
खुश रहती सबकी खुशी में, होती सुदृढ़ सहारा.

अमृत रस पिला बच्चों को, वो आनंद भर देती.
दया प्रेम करुणा का पर्याय, माँ सबसे प्यारी होती.

छलक पड़े आँखो से आँसू, माँ की याद आते ही.
मुँह से निकलता माँ माँ, चोंट जरा सा लगते ही.

शक्ति स्वरूपा देवी महिमा

रचनाकार-सीमान्चल त्रिपाठी

शक्ति स्वरुपा तुम हो देवी,
तू ही अम्बे तू काली मईया.
बड़ा ही दिव्य स्वरुप है तेरा,
आभा बड़ी निराली मईया..

जीवन हो प्रतिपल प्रकाशित,
तुम प्रकाश पुंज़ की मलिका.
तेरी अखंड ज्योत से नित दिन
खिलती मुखमंडल पे कलिका..

सच्चे मन से जो करे अराधना,
उस पर तुम कृपा बरसाती हो.
भर देती सुख संपदा से घर को,
दुख दारिद्र व कष्ट मिटाती हो..

धारण करती जब रूप दुर्गा का,
बन जाती ममता की मूरत हो.
ज्यों ही धरती तुम रूप चंडी का,
माँ बनता रूप तेरा विकराल हो..

झोली फैलाए दर तेरे जो आते,
भर देती तुम उनकी झोली हो.
सच्ची शक्ति भर तू देती मन में,
दर से ना जाए कोई खाली हो..

ना चाहो कभी तुम भोग छप्पन,
तुम तो ठहरी भाव की ही भूखी.
है मिलती जिसको तुम्हारी कृपा,
हो जाए वह मालामाल व सुखी..

मोर छत्तीसगढ़ के गाँव

रचनाकार-पुष्पलता साहू

बड़ सुघ्घर लागथे मोला,
मोर छत्तीसगढ़ के सब गांव.
नदिया बोहाथे जिहां कल-कल,
अउ तरिया तीर पीपर के छांव.

नई हे परदूषन हवा पानी म,
चारो मुड़ा खुला आसमान हे.
घर में डोकरी दाई कहानी कहिथे,
अउ गांव में टेटकू छेरका सियान हे.

कोन्हो कर हावे डोंगरी घाटी,
कोन्हो कर नांगर जोतत किसान हे.
सोंधी माटी के खुशबू संग मा,
हांसत खेत अउ खलिहान हे.

चिरई चिरगुन मन गावथे गाना,
अउ कौवा ह करत हे कांव-कांव.
लइका सियान मिलजुल के रहिथे,
अइसन सुघ्घर मोर छत्तीसगढ़ के गांव.

शिक्षा का मूल्य

रचनाकार-स्वाति मुकेश पांडे

एक छोटे से गाँव रामपुर में कुछ ही लोग पढ़े लिखे थे. इसी गाँव में बिल्लू रहता था. उसके 8 बच्चे थे. अपने बच्चों को स्कूल न भेजकर बिल्लू उन्हें खेतों में काम करने भेजता था. उसकी पत्नी रामबाई ने जिद करके अपने सबसे छोटे बेटे श्याम को स्कूल भेजना शुरू कर दिया.

स्कूल मे श्याम ने जल्दी ही गिनती जोड़-घटाव एवं पहाड़ा सीख लिया. उसको पढ़ाई में बहुत मजा आने लगा. एक दिन बिल्लू, श्याम को अपने साथ खेत ले गया.

उसी दिन बिल्लू को हफ्ते भर के काम की मजदूरी मिलनी थी. मालिक ने कहा कि 15 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से तुम्हारी 7 दिन की मजदूरी 100 रुपये हुई. बिल्लू ने 100 रुपये ले लिए. लेकिन तभी श्याम ने अपने पिता को बताया कि बाबूजी आपकी सात दिन की मजदूरी 105 रुपये होती है. मालिक आपको 5 रुपये कम दे रहे हैं. यह सुनकर मालिक झेंप गया और बिल्लू को 5 रुपये और दिए.

अब बिल्लू को समझ में आया कि मालिक प्रति सप्ताह उसे 5 रुपये कम देते थे. अब बिल्लू को अपनी गलती का एहसास हुआ. उस दिन के बाद बिल्लू अपने सभी बच्चों को स्कूल भेजने लगा.

कैलाश में होली

रचनाकार-सोमेश देवांगन

महाकाल की होली चिता भस्म लगाए.
महाकाल की होली मन को अति भाए..

पार्वती मईया पीसे देखो भांग और धतूरा.
गण सब बोले होली इसके बिना अधूरा..

नंदी गण संग भूत पिशाच सब झूमे गाये.
बम बम भोले जयकारे कैलाश में लगाये..

नंदी खेले दौड़े गणपती कार्तिकेय दौड़ाये.
चूहा मयूर भाग-भाग पिचकारी को चलाये..

होली में नजारा देखने कैलाश सब आओ.
भोले संग शक्ति के दर्शन कर सुख पाओ..

कोरोना नारे

रचनाकार-वृंदा पंचभाई

1-रह रह कर रूप कोरोना
बदल रहा है आज
अपने हाथों में ही छिपा
इससे बचने का राज.

2-गली मोहल्ले में बेखौफ
घूम रहा कोरोना.
मास्क लगा सम्हल जा अब
तभी भागेगा कोरोना.

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

वाणी मसीह द्वारा भेजी गई कहानी

चिंटू की पहली रेलयात्रा

गर्मियों की छुट्टियाँ थीं. चिंटू के मामाजी आए हुए थे. मामाजी चिंटू को उसकी मम्मी और दीदी के साथ नाना-नानी के पास बिलासपुर ले जाने आए थे. चिंटू बहुत खुश था क्योंकि उसे पहली बार रेलगाड़ी से यात्रा करने का मौका मिला था. चिंटू सभी के साथ जब स्टेशन पहुँचा तो वहाँ का वातावरण देखकर उसे मजा ही आ गया. रेल्वे स्टेशन पर खाने-पीने की चीजों की अनेक दुकानें थीं. चाय, काॅफी, कोल्ड ड्रिंक और न जाने क्या-क्या? पुस्तकों की दुकानों पर लोग अपनी पसंद की पुस्तकें खरीद रहे थे. चिंटू के लिऐ यह एकदम नया अनुभव था, उसने स्टेशन पर घूमते हुए अनेक नई बातों की जानकारी प्राप्त की.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

भ्रमण

बच्चे खुश थे क्योंकि आज विद्यालय में बालसभा होनी थी.शिक्षक ने बताया था कि आज की बालसभा में सभी बच्चे अपने घूमने फिरने की कहानियाँ सुनाएँगे. सभी बच्चे अपने भ्रमण किए स्थानों के बारे में बताने को उत्साहित थे.

बाल सभा कार्यक्रम सरस्वती वंदना एवं प्रेरणा गीत के साथ प्रारंभ हुआ. बच्चों ने बारी-बारी से अपने भ्रमण किए स्थानों के बारे में अपने अनुभव बताए. अब पूजा की बारी थी. पूजा कुछ दिन पहले अपने परिवार के साथ रेलवे स्टेशन गई थी. उनके घर कोई मेहमान आने वाले थे. पूजा ने अपना अनुभव बताना शुरू किया

मैं अपने माता-पिता के साथ पहली बार रेलवे स्टेशन गई थी. मुझे पता नहीं था कि रेलवे स्टेशन कैसा होता है? वहाँ क्या-क्या सुविधाएँ होती हैं, टिकट कहाँ से लेते हैं,अपनी गाड़ी की पहचान कैसे करते हैं? यह सब जानने की इच्छा थी. पिताजी ने मुझे इन सभी के बारे में बताया. स्टेशन पहुँचकर हमने प्लेटफॉर्म टिकट लिया. पिताजी ने बताया कि अगर हमारे पास प्लेटफार्म टिकट नहीं होगा तो हमें जुर्माना देना पड़ता है. पिताजी मुझे टिकटघर ले गये. वहाँ गाड़ियों के आने-जाने की समय सारणी लगी हुई थी. कौन सी गाड़ी कब आएगी और कब जाएगी, सब उस पर देख सकते हैं. कर्मचारी गाड़ियों के आने-जाने की घोषणा करते रहते हैं. यात्री इधर-उधर न भटकें,इसलिए पूछताछ कक्ष होता है.

मैंने सारणी में अप-डाउन ट्रेन के बारे में पढ़ा. इसके बारे में मैंने पिताजी से पूछा. पिताजी ने बताया कि सभी ट्रेनों का एक मुख्यालय होता है. जो ट्रेन अपने मुख्यालय से निकलती है अर्थात् मुख्यालय को छोड़ रही है वह डाउन ट्रेन तथा अपने मुख्यालय की ओर जा रही ट्रेन अप ट्रेन होती है.

टिकट लेने से गाड़ी में बैठने तक की प्रक्रिया पिताजी ने मुझे समझाई. रेलवे स्टेशन में मैंने देखा कि वहाँ पुस्तक भंडार,खाने-पीने के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ चाय, काफी, समोसा, कोल्ड ड्रिंक, कुल्फी आदि की दुकाने थी. पिताजी ने समझाया कि स्टेशन की खुली खाद्य सामग्री का सेवन नहीं करना चाहिए.कोई भी खाद्य सामग्री लेनी हो तो बंद पैकेट या बंद डिब्बे में मिलने वाली खाद्य सामग्री का उपयोग कर,खाली पैकेट को डस्टबिन में डालना चाहिए ताकि स्टेशन साफ़-सुथरा रहे. पिताजी ने मुझे पुस्तक भंडार से कॉमिक्स बुक दिलाई. कुछ देर पश्चात मेहमान के आने वाली ट्रेन प्लेटफार्म पर पहुँच गई. हम सब मेहमान का स्वागत करने के बाद उन्हें साथ लेकर घर पहुँच गए. उस दिन जो समय मैंने स्टेशन पर बिताया वह आज भी मुझे याद आता है.

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी

राजू नाम का एक होशियार लड़का था. उसका मित्र संजू खाने पीने और घुमने फिरने में ज्यादा रुचि लेता था. एक दिन दोनों बच्चे पापा के साथ शहर के रेलवे स्टेशन गये. वहाँ जाकर टिकट काउंटर से प्लेटफ़ॉर्म टिकट ख़रीदी. उन्होंने देखा कि वहाँ पर महिलाओं की अलग से कतार थी. सुरक्षा कर्मियों जाँच कराने के बाद वे प्लेटफ़ॉर्म पर पहुँचे. प्लेटफॉर्म पर खाने की अनेक दुकानें थीं और किताबों की दुकान भी थी. संजू अपने आपको रोक नहीं पाया उसने पापकार्न लिया और चाय पी तथा और कुछ कुछ खाने के लिए चल पड़ा जबकि राजू ध्यान से नोटिस बोर्ड पढने लगा और प्लेटफॉर्म पर घूमते हुए अन्ततः वह पुस्तक भण्डार में आकर रूका. राजू की नजर पुस्तकों पर पड़ी और उसने कुछ पुस्तकें खरीद लीं.

जब दोनों बच्चे प्लेटफॉर्म घूमकर वापस आए तो राजू के हाथ में पुस्तकें थी और संजू के हाथ में खाने पीने की वस्तुएँ. संजू ने पापकार्न खाकर पैकेट प्लेटफॉर्म पर ही फेंक दिया जिसे संजू ने उठाकर डस्टबीन में डालकर जुर्माने से बचाया तब संजू को एहसास हुआ कि कहीं जाने पर नोटिस बोर्ड पढना आवश्यक है.

राजू ने रेलवे स्टेशन का पूरा वृत्तांत सहजता से बताया जबकि संजू ने सारा समय खाने पीने में ही गँवा दिया. महत्वपूर्ण चीजें उसकी निगाहों से छुट गईं. संजू को अब अपने व्यवहार पर खूब पछतावा हो रहा था.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

ब्रज की होली

रचनाकार-प्रिया देवांगन "प्रियू"

होली का ये रंग, सभी के मन को भाते.
राधा रानी संग, कृष्ण को रंग लगाते..
गाते ब्रज में फाग, श्याम मारे पिचकारी.
गोपी ग्वाला रंग, लगाते बारी बारी..

पकड़े दोनों हाथ, प्रेयसी यूँ शर्माती.
लाल गुलाबी गाल, गोपियाँ छुप मुस्काती..
दौड़ दौड़ के आज, प्रेम की मारे गोली..
राधा रानी संग, खेलते आँख मिचोली..

मुरली की ये धून, दौड़ सुन राधा आती.
मीठी मीठी राग, प्रेम की गीत सुनाती..
लिए प्रीत की रंग, करे मीठी सी बोली.
रहे मिलन की आस, खेलते मिलकर होली..

चंदा मामा

रचनाकार-वृंदा पंचभाई

चंदा मामा, चंदा मामा
प्यारे प्यारे, चंदा मामा
पास नहीं मेरे आते हो
दूर बहुत तुम रहते हो.

अंगुल भर कभी होते हो
कभी आधी रोटी से दिखते हो
कभी गोल माँ की बिंदी से
रोज रूप बदला करते हो.

सजा थाली चंदन,रोली की
माँ तुम्हारी पूजा करती है
आशाओं के दीप जला कर
आरती नित उतारा करती है.

मंगल कामना मन में रखती
तुमको जल भर अर्घ्य चढ़ाती
चौथ पुन्नी उपवास भी करती
रहे सौभाग्य कुशल मांगती.

भोग लगाती पकवानों के
मालपुआ, खीर, मिठाई
चंदा मामा संग में तुम्हारे
मुझको भी मिल जाते है.

भाईदूज पर चंदा मामा
हमको थोड़ा सताते हो
पहले तुम्हारी पूजा होती
फिर नम्बर मेरा आता है.

ईद, करवा चौथ, दिवाली
तुम बिन ये सब आधा है
यात्रा तुम्हरी अमावस पुन्नी
निस दिन यूं ही चलती रहती.

सफलता की कहानी-सकारात्मक परिवर्तन

शिक्षिका का नाम-बृजभान टंडन

विद्यालय का नाम -कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय

जीवन कौशल की शिक्षा न केवल बालिकाओं के लिए बल्कि उन सभी लोगों के लिए आवश्यक है जो जीवन जीने की कला सीखना चाहते हैं. यह हमारे दैनिक जीवन से जुड़ा हुआ है. इसलिए बालिकाओं के साथ सत्र संचालित करने से पहले हमें यह जानना आवश्यक है कि यह कितना महत्वपूर्ण है, तभी यह सत्र बालिकाओं के लिए फलदाई होगा.क्योंकि मानव स्वयं के अनुभवों से ज्यादा अच्छी तरह सीख पता है.

मैं बृजभान टंडन के.जी.बी.वी. कोडगार (गौरेला पेंड्रा मारवाही) आवासीय विद्यालय की अधीक्षिका हूँ. मैं आप सभी के साथ अपना अनुभव साझा करना चाहती हूँ कि किस प्रकार जीवन कौशल के प्रशिक्षण ने मेरी सोच और जीवन को नया मोड़ दिया हैं. कहते हैं न कि कहीं पहुँचने के लिए कहीं से निकलना जरुरी हैं.पहले मेरी मानसिकता थी कि जिंदगी ऐसी ही है और हमें इसी तरह जीना हैं. एक महिला होने के नाते मुझे महिलाओं के सारे काम आने चाहिए. परन्तु ये काम मुझे आगे बढ़ने से रोकते थे क्योंकि घर के सारे कामों की जिम्मेदारी मुझपर होती. मेरे अंदर काफी चिड़चिड़ापन आने लगा और धीरे-धीरे यह चिड़चिड़ापन मेरी आदत बन गया. क्योंकि कोई मुझे काम का महत्व नहीं समझाता बल्कि यह कहा जाता कि मैं लड़की हूँ इसलिए मुझे ये काम करने होंगे.यह सुनकर मुझे काफी गुस्सा आता और यह गुस्सा मुझे और मेरे काम को बुरी तरह प्रभावित करता.

जब मैने जीवन कौशल का पहला प्रशिक्षण प्राप्त किया तो मुझे पता चला कि अपने गुस्से व अपनी भावनाओं को कैसे नियंत्रित किया जाता है व अपनी बात कैसे दृढ़तापूर्वक लोगों के सामने कही जाती है. संवाद करने का सही तरीका मैंने जीवन कौशल के प्रशिक्षण से सीखा है. खास बात तो यह कि मुझे जेंडर के बारे में जानने का अवसर मिला और मेरी यह समझ विकसित हुई कि जिन बातों ने मुझे परेशान किया है उन बातों की बुनियाद ही हम हैं. यदि हम बिना समझे जेंडर आधारित सोच को बढ़ावा देते हैं तो यह हमारे साथ-साथ आने वाली पीढ़ी को भी प्रभावित करेगा. हमें इस बारे में बात करनी चाहिए और लोगों को सोचने के लिए प्रेरित करना चाहिए. जेंडर आधारित सोच व्यक्ति की पहचान व खूबियों को ख़त्म करने में कोई कसर नहीं छोड़ती है. मैंने जीवन कौशल की मदद से यह समझ हासिल की, कि कोई काम या वस्तु लड़कों या लड़कियों के लिए नहीं है वह उनकी इच्छा और आवश्यकता के अनुसार बदलती है.

यह बताते हुए मुझे गर्व हो रहा है कि मैं अपनी संस्था की सारी बालिकाओं वह सारे मौके देती हूँ जिससे वे अपने लिए बेहतर कल का विकास कर सकें. अपनी इच्छा और दृढ़-विश्वास से अपना लक्ष्य हासिल करें.

अपनी सोच और व्यवहार में इस सकारात्मक परिवर्तन का श्रेय मैं “जीवन कौशल सत्र” को देना चाहूँगी.

गुड़िया लाही

रचनाकार-बलदाऊ राम साहू

नाना जी जब तैं आबे
मोरो बर पुस्तक लाबे.

गीत-कविता आनी-बानी
कथा-कहानी ल सुनाबे.

मामा जी जब-जब आही
खेल-खिलौना ले आही.

आजी दाई जब आही
खुरमी ओ धर के आही.

मौसी ला तैं कहि देबे
सुघर अकन गुड़िया लाही.

भाखा जनऊला

भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी वर्ग पहेली)

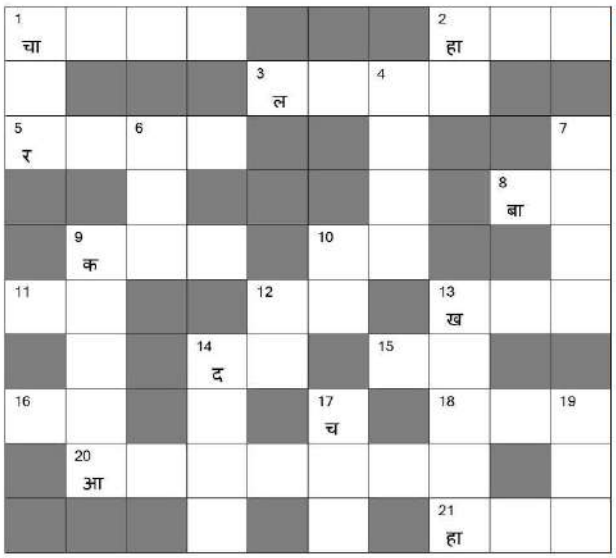

बाएँ से दाएँ

1.सार्वजनिक 2. है, उपलब्ध
3. बहुत परिश्रम से/ लेदे कर
5. धूप सेंकना 8. पारी
9. कमर 10. रुई
11. मत, नहीं
12. विश्व प्रसिद्ध लोकनृत्य
13. कांख 14. मुरुम (मिट्टी)
15. खुला मैदान 16. और
18. खुजली
20. अनंत चतुर्दशी 21. हिलता

पिछले भाखा जनउला का उत्तर

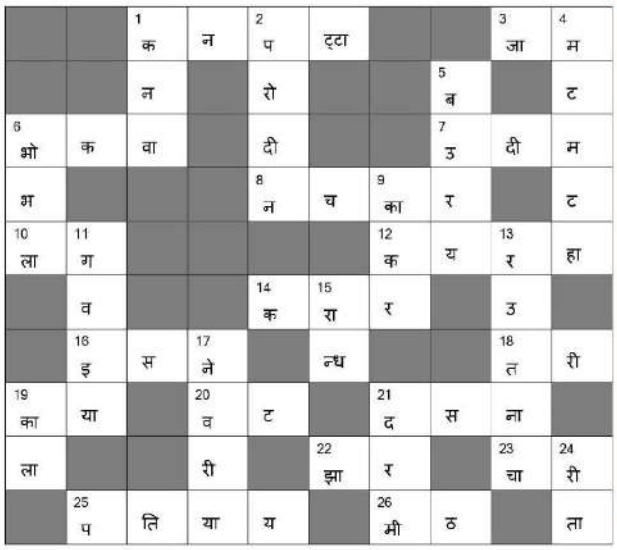

ऊपर से नीचे

1. चौड़ा 2. बाजार
4. बाराती स्वागत कार्यक्रम
6. सीढ़ी 7. बारम्बार
9. कान का मैल 10. पुस्तक
12. गोरा 13. खुरदुरा
14. भुक्खड़/खूब खाने वाला
17. चाँवल 19. रूठा

नोट:- पत्रिका में प्रदर्शित किसी रचनाओं के प्रति आप कोई आपत्ति या सुझाव देना चाहते हैं तो किलोल की मेल आई डी kilolmagazine@gmail.com अथवा पुनीत अग्रवाल संपर्क सूत्र 7828888583 को व्हाट्सएप पर संपर्क कर सकते हैं.

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

अपनी किलोल की
सदस्यता जारी रखने हेतु
सबस्क्रिप्शन लेना न भूलें

किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने की रुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता	आजीवन सदस्यता
(शुल्क 720रु.)	(शुल्क 10000रु.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदा के बैंक खाता क्र. 45730100004644 IFSC Code BARB0MOWAXX (0 is zero others are 'O' in IFSC CODE) में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात **www.kilol.co.in** में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहित अपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।